विहास वाणी

वर्ष 2019-20 के मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी भाषा पठ्य क्रम के
द्वितीय सेमिस्टर पर आधारित अध्ययन सामग्री

COMPULSORY FOUNDATION LANGUAGE (CBCS)

HINDI : Group-III

B.Com : II Semister

संपादक

डॉ. एस.ए.मंजुनाथ

सहायक प्राध्यापक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष

पोंपै कॉलेज,ऐकला, मंगलूरु

विहास वाणी

संपादक

अध्यक्ष

डॉ. एस. ए. मंजुनाथ

सहायक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष

पोंपै कॉलेज, ऐकला, मंगलूरु

संपादक मंडल

उपाध्यक्ष

डॉ. रक्षितकुमार शेट्टी

श्री शारदा कॉलेज, बसरूरु

सचिव

डॉ. शालिनी एम

एस. डी. एम व्यवहार अध्ययन

महाविद्यालय, मंगलूरु

कोशाध्यक्ष

डॉ. परशुराम जी. मालगे

बेसेंट महिला कॉलेज, मंगलूरू

मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ-विहास

मंगलूरु, कर्नाटक

दो शब्द

आदरणीय अध्यापक मित्रो ,मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ, **"विहास",** मंगलूरु विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कॉलेजों के अध्यापकों एवं छात्रों को ध्यान में रखते हुए, गत कुछ वर्षों से निरंतर कई साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करता आ रहा है। इनमें से हिन्दी छात्रों और अध्यापकों के मार्गदर्शन के लिए हिन्दी पाठ्य विषय से संबंधित अध्ययन सामग्री तैयार करना भी एक महत्वपूर्ण कार्य है ।

इस संकलन में वर्ष 2019-20 के मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी भाषा पाठ्यक्रम पर आधारित परीक्षोपयोगी विशेष अध्ययन सामग्री संग्रहीत है। विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित द्वितीय सेमिस्टर (II Semister) के बी.ए., बी.काम.,बी.एस-सी.,बी.बी.ए.तथा बी.सी.ए.,पाठ्यक्रम के अनुसार मध्यकालीन और आधुनिक कविता, लघु कथा, उपन्यास एवं निबंधों का सारांश प्रस्तुत है। विद्यार्थी अपने विचारों को सुस्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए सरल, प्रवाहमय एवं शुद्ध हिन्दी का उपयोग करें, इस दिशा में मार्गदर्शन करने के लिए विषय-विशेषज्ञों द्वारा अध्ययन सामग्री तैयार हुई है। अलग-अलग कक्षाओं के प्रत्येक प्रश्न-पत्र के अनुरूप अध्ययन सामग्री यहाँ उपलब्द है। इसमें विभिन्न कक्षाओं की परीक्षाओं के प्रश्न पत्र का नमूना प्रस्तुत करने का यथासंभव प्रयास किया गया है। इसमें व्यक्त विचार लेखकों के अपने निजी विचार है। मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ **"विहास"** की ओर से यह इस प्रकार का तृतीय प्रयास है। इस कार्य को संपन्न करने में सहयोगी अध्यापक मित्रों का भरपूर योगदान है। आशा है कि आप इसको सहर्ष स्वीकार करेंगे। इस संकलन में कई त्रुटियाँ हो सकती हैं। निवेदन है कि कृपया संशोधन करके अपने छात्रों का मार्गदर्शन करें।

डॉ.एस.ए.मंजुनाथ

संपादक

तृतीय अध्याय

वाणिज्य वाहिनी (बी.काम- II)

तृतीय अध्याय

वाणिज्य वाहिनी (बी.काम- II)

1.कबीरदास के दोहे- महात्मा कबीरदास -डॉ.एस.ए.मंजुनाथ

1. चौपाई-तुलसीदास- हर्षा के.पी

2. विनय पद- सूरदास-रूपा

3. रहीम के दोहे-रहीम- डॉ.मंजुनाथ उडुपा

4. परिचय-दिनकर- डॉ.नागरत्ना राव

5. प्रतिबिंब-सुमित्रानंदन पंत- डॉ.रक्षितकुमार शेट्टी

6. ओ मेघ- मुक्तिबोध- डॉ. वैशाली सालियान

7. धब्बा-केदारनाथ सिंह- डॉ.नागरत्ना राव

8. यह सहज कोरा कागज नहीं-भगवंत रावत-डॉ.नागरत्ना राव

10.भारत वर्षोन्नती कैसे हो सकती है-भारतेंदु-डॉ.दुर्गारत्ना

11. भय-रामचंद्र शुक्ला-प्रो.सोफिया डायस

12.वसना कुशीनगर में- केदारनाथ अगरवाल-डॉ.शाहिदा जहान

13.स्त्री शक्ति की भूमिका से उठते कई सवाल-सुधा अरोडा-डॉ.सुजना

तृतीय अध्याय

वाणिज्य वाहिनी (बी.काम- II)

1. दोहा

-संत कबीरदास

कवि परिचय :

कबीरदास जी एक महान कवि और समाज सुधारक थे। इन्होनें अपने साहित्य से लोगों को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी इसके साथ ही समाज में फैली कुरोतियों पर जमकर प्रहार किया है। कबीरदास जी सादा जीवन जीने में यकीन रखते थे वे अहिंसा , सत्य, सदाचार गुणों के प्रशंसक थे। कबीर का जन्म जन्म 1398 में काशी में हुआ था। माना जाता है वे एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से पैदा हुए थे , जिसको भूल से स्वामी रामानंद जी ने पुत्रवती होने का आशीर्वाद दे दिया था। जिसके बाद ब्राह्मणी उस नवजात शिशु को काशी में लहरतारा ताल के पास फेंक आयी थीं जिसके बाद पालन-पोषण “नीमा’ और “नीरु’ ने किया । कबीर ने रामानन्द जी को अपना गुरु स्वीकार कर लिया। कबीर दास की मृत्यु वर्ष 1518 में जनवरी के महीने में मगहर में हुयी ।

कबीर का सबसे महान ग्रन्थ बीजक है। इसमें कबीर के दोहों का संकलन है। उनकी शब्दावली हिंदू अध्यात्म से भरपूर है। यह पंजाबी , राजस्थानी, खड़ी बोली , अवधी, पूरबी, व्रजभाषा आदि कई भाषाओं की खिचड़ी है। उनकी उलटबांसियां भी बहुत प्रसिध्द हैं। उनकी वाणियों का संग्रह " बीजक " नाम के ग्रंथ मे किया जिसके तीन मुख्य भाग हैं : साखी ,

सबद (पद), रमैनी **साखी**: संस्कृत ' साक्षी , शब्द का विकृत रूप है और धर्मोपदेश के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। अधिकांश साखियाँ दोहों में लिखी गयी हैं पर उसमें सोरठे का भी प्रयोग मिलता है। कबीर की शिक्षाओं और सिद्धांतों का निरूपण अधिकतर साखी में हुआ है।

सबद गेय पद है जिसमें पूरी तरह संगीतात्मकता विद्यमान है। इनमें उपदेशात्मकता के स्थान पर भावावेश की प्रधानता है ; क्योंकि इनमें कबीर के प्रेम और अंतरंग साधना की अभिव्यक्ति हुई है।

रमैनी चौपाई छंद में लिखी गयी है इनमें कबीर के रहस्यवादी और दार्शनिक विचारों को प्रकट किया गया है।

साधु सीप समुद्र के, सतगुरु स्वाती बून्द।

तृषा गई एक बून्द से, क्या ले करो समुन्द।।

कबीरदास जी कहते हैं सच्चे साधु सीप के समान होते हैं। जैसे एक सीप सागर के बीच मे रहते हुए भी सिर्फ स्वाती नक्षत्र में गिरी बूंद को ही अपने अंदर ग्रहण करती है, उसे सागर के पानी से कुछ लेना देना नहीं होता । वैसे ही साधु को सीप मानो , वे भी चारों तरफ फैली माया से आकर्षित नहीं होते औऱ सद्गुरु उनके लिए स्वाती बूंद की तरह होते हैं । उनकी प्यास सिर्फ सद्गुरु से ही बुझ सकती है, वे उन्ही से संतुष्ट हो सकते हैं ।

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट ।

अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ।।

गुरु कुम्हार है, और शिष्य घड़ा है; गुरु भीतर से हाथ का सहारा देकर और बाहर से चोट मार मार कर तथा गढ़ गढ़ कर शिष्य की बुराई को-निकालते हैं। जिस प्रकार कुम्हार अनगढ मिट्टी को तराशकर उसे सुंदर घडे की शक्ल दे देता है , उसी तरह गुरु भी अपने शिष्य को हर तरह का ज्ञान

देकर उसे विद्वान और सम्मानीय बनाता है। हां , ऐसा करते हुए गुरु अपने शिष्यों के साथ कभी कभी कडाई से भी- पेश आ सकता है , लेकिन जैसे एक कुम्हार घडा बनाते समय मिट्टी को कडे हाथों से गूंथना जरूरी समझता है , ठीक वैसे ही गुरु को भी ऐसा करना पडता है। वैसे , यदि आपने किसी कुम्हार को घडा बनाते समय ध्यान से देखा होगा , तो यह जरूर गौर किया होगा कि वह बाहर से उसे थपथपाता जरूर है , लेकिन भीतर से उसे बहुत प्यार से सहारा भी देता है।

कबीर देख्या एक अंग, महिमा कही न जाइ ।
तेज पुंज पारस घणो, नैनू रहा समाई ॥

कबीर कहते हैं कि मैंने एक ईश्वर के अंग (आंशिक) का दर्शन किया है। फिर भी मैं उसकी महिमा का बखान नहीं कर सकता । वह शक्ति का पुंज है, जो अनंत अलोक रूप में प्रतिभासित होता रहत है । परमात्मा पारस की तरह सौभाग्यदाता है । लोहे से कंचन बनाने की उसमें पूर्ण क्षमता है । उसके अनंत सौंदर्य का प्रकाश मेरे नेत्रें में समा गया है । एक अंग का अर्थ एक निष्ठ होकर देखना भी हो सकता है ।

जाके मुह माथा नहीं, नाहिं रूप कुरूप ।
पुहुप वास ते पातरा, ऐसा तत्त अनूप ॥

इस दोहे में कबीरदास निर्गुण निराकार ब्रह्म के संबंध में बताते हैं । निराकार ब्रह्म का कोई निश्चित रूप नहीं होता । उसका न चेहरा होता है न मस्तक । वह सुंदर असुंदर से परे है। उसका कोई लक्षण नहीं है। ब्रह्म का वास फूल में सुगंध की भाँति बहुत ही सूक्ष्म होता है ।

बिरहा बुरा जिनि कहै, बिरहा है सुलतान ।
जिहि घटि बिरह न संचरै, सो घट जान मसान ॥

इस दोहे में कबीरदास परमात्मा के दर्शन के लिए ललायित आत्मा की विरह व्यथा का चित्रण प्रस्तुत करते हैं । कबीर का कहना है कि विरह तो बादशाह है उसको बुरा न कहना। भक्त के हृदय में भगवान के प्रति विरह की भावना होनी चाहिए। जिस जीव में विरह की भावना न हो वह जीव स्मशान के समान होता है।

बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागे कोई ।
राम वियोगी न जिवै, जिवै तो बौरा होई ॥

विरह रूपि साँप शरीर रूपि इस बांबी में घुसा हुआ है। इस पर किसी प्रकार के मंत्र का कोई प्रयोग नहीं हो सकता। भगवान का सच्चा वियोगी जीवंत रह नहीं सकता अगर राम के वियोग जो जीवित रहता है लोक उसे पागल कहता है।

यह तन काचा कुंभ है, लिया फिरै था साथि ।
ढबका लागा फूटि गया, कछू न आया हाथि ॥

इस दोहे में संत कबीरदास जीवन की नश्वरता के संबध में बताते हैं। जीवन क्षणभंगुर है अतः इसके आकर्षण में पडना मूर्खता है । यह शरीर कच्चे कुंभ (मटके) के समान है एक छोटा सा धक्का लगने पर भी यह घडा टूट सकता है । इसके बाद कुछ भी नहीं बच सकता। इस पर हमें अभिमान नहीं करना चाहिए क्योंकि काल के सामने हमारा कुछ भी नहीं चल सकता।

मनीषा जनम दुलभ है, देह न बारंबार ।

तरवर थै फल झडि पड्या, बहुरि न लागै डारा ॥

इस कबीरदास मूल्यवान मनुष्य जन्म के बारे में बताते हैं । यह मनुष्य जन्म बहुत ही मुश्किल से मिलता है । अपने पूर्व जन्म के सत्कर्मों के फल के कारण यह जन्म प्राप्त होता है । जिस प्रकार पेड पर उगा हुआ फल पेड से नीछे गिर जाने पर फिर से वही लग नहीं सकता उसी प्रकार मानव जन्म पुनः मिल नहीं सकता। अतः इस शरीर का उपयोग सत्कर्म के लिए करना चाहिए।

कबीरा यह तन जात है, सकै तो लेहु बहोडि ।
नांगे हाथू ते गये, जिनके लाख करोडि ॥

महात्मा कबीरदास इस दोहे में मानव जीवन की नश्वरता का उल्लेख करते हैं। मनुष्य अपने इस जीवन को भिगविलास में नष्ठ कर रहा है। यह शरीर नष्ट होनेवाला है। इसको संभालना चाहिए। इस दुनिया में हम खाली हाथ आये थे और जिनके पास लाख-करोड होने पर भी खाली हाथ जानेवाले हैं ।

कबीरा सो धन संचिये, जो आगै कूं होइ ।
सीस चढाये पोटली, ले जात न देख्या कोई ॥

इस दोहे में कबीरदास मनुष्य को भक्ति साधना रूपी संपत्ती का संचय करने के लिए कहते हैं । कवि कहते हैं हमारे आगे के जीवन में काम आनेवाली संपत्ती का अर्जन करना चाहिए । हमारे यह लौकिक संपत्ती का कोई फायदा नहीं है। अपने साथ हम कुछ भी नहीं ले जा सकते । अतः इस नश्वर जीवन को भगवान की भक्ति में सार्थक बनाना चाहिए।

एक अंक के प्रश्न:

1. कबीरदास का जन्म कहाँ हुआ था ? काशी में हुआ था
2. मनुष्य का जन्म किस प्रकार है ? दुर्लभ है
3. कबीर के अनुसार यह शरीर किसके समान है ?कच्चे कुंभ के समान है
4. कबीर के अनुसार गुरु क्या है ? गुरु कुम्हार है
5. साधु किस तरह होता है ? साधु समुंदर के सीप की तरह है

संदर्भ सहित व्याख्या के प्रश्न :

1. कबीरा सो धन संचिये, जो आगै कूं होइ ।
   सीस चढाये पोटली, ले जात न देख्या कोई ॥
2. मनीषा जनम दुलभ है, देह न बारंबार ।
   तरवर थै फल झडि पड्या, बहुरि न लागै डारा ॥

3. जाके मुह माथा नहीं, नाहिं रूप कुरूप ।
पुहुप वास ते पातरा, ऐसा तत्त अनूप ॥

4. गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट ।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ।।

निबंधात्मक प्रश्न :

1. कबीरदास के दोहों का सार अपने वाक्यों में लिखिए।
2. कबीर के जीवन चित्र के साथ उनके दोहों का सार लिखिए।

प्रस्तुति :

डॉ.एस.ए.मंजुनाथ

हिन्दी विभागाध्यक्ष, पोंपै कॉलेज, ऐकला, मंगलूरु

****

2. चौपाई

गोस्वामी तुलसीदास

कवि परिचय :

तुलसीदास का जन्म बांदा जिले के राजपुर गाँव में हुआ था । उनके पिता का नाम पं. आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था । उन्होंने संवत् 1554 की श्रवण शुक्ला सप्तमी को अभुक्त मूल नक्षत्र में बारह माह माता के गर्भ में रहकर "राम शब्द" बोलते हुए जन्म लिया । जन्मते ही माँ का स्वर्गवास हो गया और पिता ने अनिष्ट की आशंका से उनका त्याग कर दिया । माता ने मरते समय अपनी चुनिया नामक दासी को उन्हें सौंप दिया । पांच वर्ष की अल्पायु में अपनी धाय माँ से भी वे वंचित होकर व्दार-व्दार पर भीख माँगकर पेट पालने लगे । तभी स्वामी नरहरीदास जी ने उन्हें शिष्य बनाकर अपने पास रख लिया ।

संवत् 1583 में इनका विवाह रत्नवाली से हुआ । रत्वाली स्वयं एक संत स्वभाव की सुन्दर महिला थी । इनकी क्टु वचनों से तुलसी के जीवन की दिशा ही बदल दी । सवंत् 1631 से सवंत् 1633 तक उन्होंने ' रामचरितमानस ' की रचना की । सवंत् 1680 में काशी की अस्सीघाट पर राम-राम करते हुए अपना नश्वर शरीर छोड़ा । इनकी रचनाएँ, रामचरितामानस, गीतावालि, दोहेवाली, कवितावाली विनय - पत्रिका आदि ।

चौपाई : चार चरण का प्रसिद्ध मात्रिक छंद ।

1. ऐसे को उदार जग महीं ।

तो भजु राम काम सब पूर्ण करे कृपानिधि तेरो ।|

प्रस्तुत पद को विनय पत्रिका से लिया गया है। महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी प्रभु राम की वंदना करते हुए कहते है कि, इस संसार में

श्रीराम के समान कोई दयावान नहीं है, जो बिना सेवा के ही दीन- दुःखियों पर अपनी कृपा बरसाते है, कवि कहते है कि बड़े – बड़े ज्ञानियों और मुनियों को भी योग और तपस्या के भी भगवान का वैसा आशिर्वाद नहीं मिलता जैसा की भगवान श्रीराम के व्दारा जटायू और शबरी को मिला । जिस कृपा कॊ पाने रावण को अपने दस सिरों का अर्पण करना पड़ा । वही प्रभु कृपा विभीषण को कुछ त्याग किये बिना ही श्रीराम से प्राप्त हो गयी। तुलासीदास अपने मन को संबोधित करते हुए कह्ते हैं कि – हो मन, जीवन में सुख प्राप्त करनी हो तो प्रभु श्रीराम को निस्वार्थ भजो । वहीं सबका कल्याण करते है, सभी की मनॊकामनाएँ पूरी करते हैं । यानि मोक्ष सहज ही प्राप्त हो सकता है ।

2. कीर कै कागर नृप चीर .....तजि बाप को राज बटाऊ की नई ॥

तुलसीदास की प्रसिद्ध कृति " कवितावली ' से लिया गया पद है । जिसमे कवि ने राम वनगमन व उनकी निस्वार्थ स्थिति को निरूपित किया है । तुलसीदास कहते है कि, चौदह वर्ष की लंबी वनयात्रा को जाते समय राजसी वस्त्रॊं, आभूषणॊं आदि का त्याग करते हुए वे दुःखित नहीं हुए अपितु ऎसे छोड़ा उस सब चीजों को जैसे तोता अपने पंखों का त्याग करते हुए तनिक भी दुःखित नहीं हॊता । राम ने निस्पृह भाव से आश्रय देनेवाले पेड़ – पौधॊं की भांति ही मार्ग में मिलनेवाले स्त्री – पुरुषों व अयोध्या नगरी के सभी निवासियों का साथ छोड़ दिया ।

उनके केवल भाई लक्ष्मण व पतिव्रता की साक्षात् प्रतिमा सीता ऎसे सुशोबित हो रही हैं मानो धर्म एवं कर्म शरीर रूप धारण कर साथ चल रहें हों । इस प्रकार कमल रूपी नेत्रोंवाले राम एक प्रथिक की भाँति अपने पिता के राज्य को त्याग कर चल दिए ।

प्रस्तुत पद में श्रीराम पित्र आज्ञा का पालन करने का आदर्श को समझाया गया है ।

3. जाति – पांति कुल धर्म बड़ाई -------- दूसरी रति मम कथा प्रसंगा ॥

प्रस्तुत प्रसंग ' राम्चरितमानस ' के अरण्यकांड ' शबरी प्रसंग' से लिया गया है । इसमें शबरी जो एक भीलनी जाति की थी, उन्हें संसार की दृष्टि में भजन करने का यॊग्य कोई गुण नहीं था, किन्तु उसके ह्रदय में प्रभु राम के लिए सच्ची चाह थी । मतंग ऋषि के आशिर्वाद से शबरी कई सालों तक श्रीराम के दर्शन हेतु प्रतीक्षा करती हैं । जब राम शबरी से मिलते है तो अपनी नवधा (नौ प्रकार) भक्ति का उपदॆश देते है । जाति – पँति, कुल धर्म, धन, शक्ति, कुटुंब, गुण और चतुराई – इन सबके रहते हुए भी भक्ति के बिना मानव ऎसा है, जैसे जलहीन बादल (शॊभाहिन) जैसे दिखाई पड़ता है । भक्तिहिन जीवन का कॊई महत्व नहीं हॊता ।

राम शबरी को पुनः नवधा भक्ति के बारे में कहते है – अब तू सावधान हॊकर सुनो और मन में धारण करलो, दूसरी है मेरा कथा प्रसंग को ध्यान से सुनना ।

तुलसी जी का कहना है जिस साधक में शबरी जैसी भक्ति हो, भक्त चाहे जहाँ भी रहें प्रभु राम खुद ही उनसे मिलने पहुँच जाते है ।

4. ह्रदय घाव मेरे, पीर रघुवीर .....केवल कांति मोल हीरे ॥

प्रस्तुत पद ' गीतवली ' से लिया गया है । लक्ष्मण के मूच्र्छा से सचेत होने की घटना को इसमें दर्शाया गया हैं । मेघनाद के प्रहार से लक्ष्मण मूर्च्छित हो गये। हनुमान संजीवनी बूटी लाने के उपरंत लक्ष्मण सचेत हो गये और वानरों के पूछने पर लक्ष्मण उत्तर में कहते है कि, मेरे तो ह्रदय में केवल घाव ही है, उसकी पीड़ा तो रघुनाथ जी के ह्रदय में है । लक्ष्मण जी कहते है कि आप मेरे से बार – बार मेरी पीड़ा के बारे में क्यों पूछ रहे हैं । मेरी स्थिति तो उस तोते के समान है जैसे, कोई तोते को पाठ पढ़ा दे, और पुनः

पाठ के अर्थ की चर्चा उससे करे तो, वह क्या उत्तर दे सकता है ? क्योंकि उसे कुछभी तो पता नहीं। हिरे का तो केवल मूल्य और कांति ही होता है, जबकि उसके व्दारा सुख, लाभ, हानियाँ य शादि सब राजा को मिलने हैं न कि हीरे को । लक्ष्मण ने यहाँ अपने को हीरे व तोते के समान बताते हुए भी महानता श्रीराम की हि अभिव्यक्त की हैं तुलसीदास कहते हैं लक्ष्मण के ऐसे वचनों को सुनकर बड़े – बड़े धीर भी अधीर हो उठते है । राम और लक्ष्मण के प्रेम की तुलना (उपमा) दूध और पानी से भी नहीं दी जा सकती । उनकी प्रीति प्रगाढ़ है ।

5. रावरे दोष न पायन को ----------हंसे प्रभु जानकी ओर हहा है ॥

प्रस्तुत पद ' कवितावाली' से लिया गया है । जिसमें श्रीराम के वनगमन की घटना व 'केवट प्रसंग' का वर्णन है । गंगा नदी को पार लगाने श्रीराम जब केवट से अनुरोध करते है तो, केवट कहता है – आपके चरणों का दोष नहीं, अपितु आपके चरणों की धूलि का ऐसा महान प्रभाव है कि, जिसके छूते ही पत्थर की शिला (अहिल्या) स्त्री बन गई । मेरी नाव तो काठ (लकड़ी) की है और पत्थर से ज्यादा कठोर तो होता नहीं है । मेरी नाव भी मुनि की स्त्री हो जाएगी मैं हार जाऊँगा । रोजी – रोटी टी भी छिन जाएगी । अतः मेरी यह प्रार्थना है कि, पहले मैं आपके चरण धो लूं, फिर नाँव चढ़ा सकूँगा । आपकी क्या आज्ञा है ।

तुलसीदास यह कहते हैं कि, केवट के चातुर्यपूर्ण शब्दों को सुनकर श्रीराम सीता की और देख हँस देते हैं ।

6. सीस जटा उरबाहु बिसाल, -------- सांवरे से सखि रावरे कोहै ॥

तुलसीदास कहते है कि, जब श्रीराम, सीता और लक्ष्मण यमुना नदी के पास एक गाँव में पहुँचते हैं । वहाँ के निवासी इन्हें बड़े स्नेह से जलपान कराते हैं

। तब गाँव की स्त्रियां राम के सौंदर्य को एक ओर देखती हैं तो दूसरी तरफ़ वीरगात तपस्वी के रूप की झलक भी पाती हैं । अपने मन पर नियंत्रण करने में असमर्थ गाँव वधुएं सीता से पूछ ही लेती हैं कि हे, सखी जिसके सिर पर जटाएं हैं लंबी भुजाएँ हैं, सुंदर विशाल नेत्र हैं, धनुष बाण कंधे पर धारण किए हुए जो हम सबको विमुग्ध कर लिया है । आप यह बताओ कि श्याम वर्ण वाले आपके कौन हैं, आपका उनके साथ क्या संबंध है - साधु वेश और साथ में तुम्हारे जैसी सुंदर नारी ।

इस पद में गाँव की स्त्रीयाँ चिंतित है कि, साधु वेशधारियों के संग सुंदर सीता ।

7. नर बिबिधं कर्म अधर्म बहु -------- ऎसे प्रभुहि बिसारी ॥

प्रस्तुत पद को 'श्रीरामचरितमानस' के अरण्यकाण्ड से लिया गया है । तुलसीदास ने भक्ति में विश्वास की प्रगाढ़ता बतलाया है । शबरी एक आदिवासी भीलनी थी । उसका स्थान प्रमुख राम भक्तों में है । वनवास के समय राम – लक्ष्मण ने शबरी का आतिथ्य स्वीकार किया था । उनके भक्ति पर अगाध विश्वास को देखकर प्रभु राम ने स्वतः मोक्ष प्रदान किए । मानव नाना प्रकार के मत – मतांतर, पाप – कर्म झंझटों को छोड़कर श्रीराम के चरणों के प्रति दृढ़ विश्वास के साथ प्रेम करना है, उसी में तुम्हारा हित है ।

प्रस्तुत पद में तुलसीदास जी का कहना है, चाहे राजा - रंक,धनी - दरिद्र, मूर्ख पण्डित हो, सच्चे मन से भक्ति करोगे तो ही तुम्हारा उद्दार होगा ।

संदर्भ सहित व्याश्व्या के प्रश्न:

1. ऎसो को उदार जग माहिं----------कहुं प्रभु न बहुत जिय जानी ॥
2. जाति पांति कुल धर्म बड़ाई ----------दूसरी रति मम कथा प्रसंगा ॥
3. शवरै दोष न पायन को ---------- हंसे प्रभु जानकी ओर हहा है ॥

4. सीस जटा उरबाहु बिसाल ----------सांवरे से साखि रावरै को हैं ॥

निबंधात्मक प्रश्न :

1. गोस्वामी तुलसीदास श्रीराम को किस प्रकार कृपानिधी बतलाया हैं ? कविता के आधार पर समझाइए ।
2. शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश, भक्ति में विश्वास का महत्व क्या हैं ? वर्णन कीजिए
3. लक्ष्मण के मूच्र्छा से सचेत होने की घटना का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए

प्रस्तुति: श्रीमति हर्षा के. पि.
हिरा विमेन्स कॉलेज, तोक्कोट्, मंगलूरु.

****

3. विनय पद

- **सूरदास**

कवि परिचय:

हिन्दी साहित्याकाश में सूर्य के समान देदीप्यमान भक्त कवि सूरदास भक्तिकाल के कृष्ण काव्य धारा के अनमोल रत्न हैं। जनश्रुति के आधार संवत १५३५ विक्रमी को दिल्ली के निकट सीही नामक ग्राम के ब्राह्मन परिवार में इनका जन्म हुआ। इनके पिता का नाम रामदास था जो अकबर के दरवार में नायक थे। सूर नेत्रहीन थे। वे वल्लभाचार्य से दीक्षित हुए थे। सूरदास आचार्यजी की आज्ञा से श्रीनाथजी के मंदिर में भजन-कीर्तन करने लगे। यहाँ की गायक मंडली में आठ भक्त गायक थे जो 'अष्टछाप' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें सूर का स्थान सर्वोपरि है। सूर सारावली, सूरसाग? की भूमिका के रूप में लिखी गई प्रतीत होती है । यह लीला प्रधान ग्रंथ न होकर सिद्धांत प्रधान है। सूरदास ने पुरुष होते हुए भी लगता है माता का हृदय पाया था। इसिलिए माता यशोदा के हृदय के वात्सल्य भावों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति की है। वात्सल्य और शृंगार का चित्रण भी सुंदर बन पडा है। सूरदास के विनय के पदों से दास्य भाव आत्म दैन्य भाव उजागर होता है । सूरदास भले ही अंधे थे किंतु उनकी मन की आँखें खुली हुई थीं।

1. चरन-कमल बंदौ हरि राई.....बार-बार बंदौ तिहि पाई ॥

यह पद सूरसागर के मंगलाचरण में संकलित है। इसमें कवि भगवान की अपार कृपा के महत्व को बताते हुए कहते हैं कि जिस पर श्रीहरि की कृपा होती है उसके लिए असंभव भी संभव हो जाता है। लंगडा भी पर्वत पार कर सकता है। अंधे को सबकुछ दिखाई देता है। बहरा फिर से सुनने लगता है। गूँगा बोलने लगता है। निर्धन गरीब राजा बन सकता है । सूरदास जी कहते हैं कि ऐसे करुणामय प्रभावशाली प्रभु के चरणों में बार-बार वंदना करता हूँ।

2. खेलत मैं को काको गुसैया..... दाउ दियौ करि नंद दुहैया ॥

यह पद सूरसागर के गोकुल लीला प्रसंग से लिया गया है। इसमें बाल कृष्ण के स्वभाव और मनोवृत्ति का सुंदर चित्रण है। श्रीदामा बलराम और श्रीकृष्ण के सखाओं में एक प्रधान गोप थे। खेल-खेल में श्रीकृष्ण पराजित हो जाते हैं और श्रीदामा जीत जाते हैं। मगर श्रीकृष्ण अपनी हार स्वीकर नहीं करते हैं। इस पर ग्वाल बालक श्रीकृष्ण से कहते हैं- कौन किसका स्वामी होता है । यहाँ तो सब समान है । छोटे-बडों का सवाल नहीं उठता। पराजित होने पर हे कृष्ण तुम क्यों व्यर्थ में क्रोधित हो रहे हो, हम तुम्हारे आश्रय में नहीं रहते हैं और न ही तुम जाति-पांति में हमसे बडे हो। खेल में तो सभी बराबर होते हैं। तुम अपनी पराजय स्वीकर कर लो। हे ! कृष्ण क्या तुम अपना अधिकार इसलिए अधिक दिखाना चाहते हो क्योंकि तुम्हारे पास गाएँ अधिक हैं। तुम्हारा यह रोब यहाँ नहीं चलेगा जो खेल में बेईमानी करता है उसके साथ कोई खेलना नहीं चाहता है। इतना कहकर सब ग्वाल बालकों ने खेलना बंद कर दिया और वे खेल छोडकर बैठ गए। अंत में खेलने के इच्छुक श्रीकृष्ण ने श्रीदामा की जीत स्वीकार कर ली । सूरदास्जी कहते हैं मेरे स्वामी तो खेलना ही चाहते इसलिए नन्दबाबा की शपथ खाकर खेलना शुरु किया ।

3. मोहिं कहत जुवती सब चोर..... वै तरुनी कह बालक मोर ॥

इस पद में कवि ने माखन लीला प्रसंग का वर्णन किया है। बालक कृष्ण माता यशोदा से गोपियों की शिकायत करते हुए कहते हैं कि गोपियाँ स्वयं उन्हें बुलाकर माखन खिलाती है और स्वयं ही उसे माखन चोर कहती हैं। माँ यह तो बताओ मैंने माखन कब चुराया है ? मैं तो बाहर खेलता हूँ और गोपियाँ मेरी ओर ही देखती रहती हैं। संदर्भ मिलेते ही ये मुझे अपने घर बुलाती हैं और गोद में बिठाकर मेरा मुँह चूमती हैं। अपने हाथों से मुझे मक्खन खिलाती हैं। कृष्ण कहते हैं कि हे माता ! मैं आपकी कसम खाकर कहता हूँ कि मैं उनके पास नहीं जाऊँगा। माता यशोदा कृष्ण की बातें सुनकर गोपियों को कोसती हैं और बालक कृष्ण को गले से लगा लेती हैं और कहती हैं कि कहाँ ये युवतियाँ और कहाँ मेरा छोटा-सा बालक ।

4. निसि दिन बरषत नैन हमारे..... गोकुल काहैं बिसारे ॥

यह पद सूरसागर के मथुरा –गमन प्रसंग से लिया गया है। इसमें कृष्ण का दोस्त उद्धव गोपियों के लिए संदेश लेकर आता है। कृष्ण पहले उद्धव से कहते हैं कि तुम शीघ्र ही ब्रज के लिए प्रस्थान करो। वहाँ जाकर मेरी प्यारी गोपियों को मेरे प्रेम का संदेश सुनाना और उनके दुख को दूर करना। इस पर गोपियाँ अत्यंत कारुणिक शब्दों से उद्धव से प्रार्थना करती हैं – हे उद्धव आप यहाँ से शीघ्र चले जाओ और कृष्ण को यहाँ भेजने का प्रयास करो। हे उद्धव आप हमारी दशा देख ही रहे हो। हम दिन-रात आँसू बहाते रहते हैं। जब से कृष्ण ब्रज से मथुरा चले गए हैं, हमारी आँखों में वर्षा ऋतु धारण कर लिया है। आँखों में काजल तक नहीं रुक सकता। हमारे चहरे रो-धोकर काले पड गए हैं। हमारी चोली-ओडनी भी सूखती नहीं है। निरंतर आँसू बहाने से हमारा हृदय ठंडा ही रहता है। हमारा क्रोध कम इसलिए नहीं होता क्योंकि हमारे प्रति कृष्ण का व्यवहार । हे ! उद्धव, उस कृष्ण से जाकर हमारी स्थिति बता दे और बता देना कि कृष्ण गोकुल और गोपियों को क्यों भूला दिया है। कृष्ण सभी की रक्षा करनेवाले हैं। गोपियाँ चाहती हैं कि कृष्ण हमारी रक्षा करें।

5. ऊधौ तुम यह निश्चय जानौ.....ब्रह्म बिना नहीं आसत ॥

यह सूरदास द्वारा लिखित भ्रमरगीत से लिया गया है। इसमें कवि ने उद्धव के निर्गुण ब्रह्म और गोपियों के बिरह का उल्लेख किया है। उद्धव श्रीकृष्ण के मन के भाव को नहीं समझ पा रहा था। वह अपने ज्ञा-योग के ध्यान में ही मग्न रहता है। कृष्ण उद्धव को समझाते हुए कहते हैं कि – हे ! उद्धव मैं तुम्हें पूर्ण मन से ब्रज भेज रहा हूँ । तुम शीघ्र ही वहाँ जाओ। जिस ईश्वर को तुम जानते हो वह अविनाशी है उसका आकार, प्रकार, जाति, कुल, पहचान आदि का कुछ भी पता नहीं है। अर्थात निर्गुण ब्रह्म जाति-कुल से संबंधित नहीं है। तुम्हारा ब्रह्म अमर है। यह ज्ञान गोपियों को दो। वे विरह नदी में डूब रही हैं। उद्धव तुम गोपियों को यह बताओ कि बिना ब्रम्ह के मोक्ष नहीं मिल सकता । कृष्ण को त्यागकर भूलकर ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त करने

को कृष्ण उद्धव को बताते हैं- इस संदेश को गोपियों को देने के लिए कृष्ण उद्धव से कहते हैं।

6. निरगुन कौन देस को बासी ?.....सूर सबै मति नासी ॥

इस पद को भ्रमरगीत से लिया गया है। यहाँ गोपियाँ उद्धव के निर्गुण ब्रह के बारे में पूछते हैं। उद्धव गोपियों से कहता है कि- "कृष्ण को त्यागकर निर्गुण ब्रह्म को ध्यान करेंगे तो मोक्ष मिल सकता है। गोपियों के अनुसार सुगुण साकार से प्रेम या भक्ति किया जाता है। मगर जिसे देखे नहीं, जिसके देश का पता नहीं, उससे कैसे प्रेम करें? गोपियाँ उद्धव से प्रश्न करती है कि उद्धव नाराज न होना हमारी बात पर उत्तर दो कि उस ब्रह्म का पिता और माता कौन है? उसकी पत्नी कौन है? दासी कौन? किस रस का अभिलाषी है? उसे कैसे काम अच्छे लगते हैं? उद्धव से गोपियाँ पुनः कहती हैं कि यदि तुमने हमारे साथ मजाक किया तो अपनी करनी का फल भुगतोगे। गोपियों की यह बात सुनकर उद्धव निरुत्तर हो जाता है।

एक अंक के प्रश्न :

1. श्रीकृषण उद्धव को कहाँ भेजते हैं ? ब्रज
2. बालकृष्ण माता यशोदा से किसकी शिकायत करते हैं? गोपिकाओं की
3. किसकी कृपा से अंधा देख सकता है? श्रीहरि की कृपा से
4. सूरदास किस काव्य धारा के कवि है ? कृष्ण काव्य धारा के
5. श्रीकृष्ण उद्धव को किनके दःख दूर करने के लिए कहते हैं ? गोपियों के

संदर्भ सहित व्याख्या के प्रश्न :

1. चरन-कमल बंदौ हरि राई..... रंक चले सिर छत्र धराइ ॥
2. जाति पांति हमते बड नाहीं.....जातै अधिक तुम्हारे गैयां ॥
3. खेलत कहूँ रहौ मैं बाहिर.....कहि विधि सो करति निहोर ॥
4. सदा रहती पावस रितु हम पर..... उरविच बहत पनारे ॥

एक अंक के प्रश्न:

1. सूरदास के पदों का सार अपने वाक्यों में लिखिए ।
2. सूरदास के व्यक्तित्व का चित्रण करते हुए प्रस्तुत पदों का सार लिखिए।

प्रस्तुति: श्रीमति.रूपा आर

महेश कॉलेज, मंगलूरु

****

4. रहीम के दोहे

कविवर रहीम

कवि परिचय:

हिन्दी साहित्य की श्री–समृद्दि में मुसलमान कवियों का विशेष योगदान रहा है। इन कवियों में रहीम नाम से प्रख्यात अब्दुर्रहीम खानखाना का प्रमुख स्थान है। रहीम अपने समय के वीर योद्धा, कुशल राजनीतिज्ञ एंव सहृदय कवि थे।अकबर के आभिभावक बैरम खां इनके पिता थे। अकबर के दरबारी कवियों में उन्हें सर्वोच्च स्थान था। अकबर की देखरेख में ही इनका पालन–पोषण व शिक्षा हुई थी । वे अरबी, फारसी, तुर्की, हिन्दी व संस्कृत के विद्वान थे। उन्होंने अपने जीवन में अनेक उतार–चढाव देखे। अपनी बहादुरी और पराक्रम के लिए सूबेदारी एंव जागीरें भी मिली तो कोपभाजन बनने के कारण दारिद्रय भी भोगना पडा । वे बडे उदार दानी थे।

हिन्दी साहित्य जगत में रहीम अपने दोहों में वर्णित लोकव्यवहार, नीति तथा भक्ति के समन्वय के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रतिभावान होने के कारण उन्होंने अपने जीवन के कटु सत्यों की अनुभूति को भावाभिव्याक्ति प्रदान की है। उनके दोहों में वैष्णवभक्ति भावना लक्षित होती है। दोहावली बरवै नायिका भेद, रास पंचाध्यायी तथा मदनाष्टक इनके प्रसिद्द काव्यग्रंथ हैं। उन्होंने दोहों के अतिरिक्त श्रृंगार के वरवै भी लिखे हैं।

व्याख्या : 1. रहीम कहते हैं कि जिस मनुष्य में बुद्धि नहीं है, जो धार्मिक नहीं है, जिसका यश नहीं है, और जो दानी नहीं है। ऐसे मनुष्य ने बेकार ही पृथ्वी पर जन्म लिया है, और वह बिना पूँछ और सींग का पशु है। विशेष : भर्त्तहरि ने भी ऐसे मनुष्यों की निंदा करते हुए कहा है कि जिन मनुष्य में न तो विद्या , न तप, न दान, न ज्ञान, न शील, गुण एवं धर्म नहीं है, बे इस भूलोक में पृथ्वी के भार स्वरूप पशु हैं।

2. रहीम कहते हैं कि सभी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना ही उचित है, और हितैषी, मित्र तथा अपनी ही जाति के मनुष्यों से कभी भी वैर नहीं करना चाहिए, क्योंकि इस जन्म में जिन मनुषों की संगति मिली है, वह फिर दोबारा नहीं मिलेगी। विशेष :'रीति प्रीति सबसे भली' का यह अर्थ भी है कि प्रेम का व्यवहार भी सर्वोत्तम है।

3. जीवन की नश्वरता का वर्णन करते हुए रहीम कहते हैं कि इस संसार में सदा आठों प्रहर जाने का नगारा बजता रहता है अर्थात हर समय मनुष्यों की मृत्यु होती रहती है। अतः ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं जो इस जग में आकर स्थाई रूप में निवास कर रहा हो। यहाँ जीवन की नश्वरता का सजीव वर्णन है।

4. रहीम कहते हैं कि यद्यपि सृष्टि के सभी वृक्ष एवं लताएँ अपनी जडों से ही अपना भोजन करके फलते–फूलते हैं। किंतु अमरबेली बिना जड की होती है जिसका प्रभु विश्वंभर पालन पोषण करते हैं। अतः हे मुर्ख मनुष्य! तू ऐसे प्रभु को, जो सृष्टि नियमोंके विरुद्ध कार्य करने में समर्थ और दयालु हैं,उन्हें छोडकर अन्य किसी प्रभु की खोज करता हुआ भटक रहा है।

5. प्रेमाग्नि की विशेषता का बर्णन करते हुए रहीम कहते हैं जो व्यक्ति अन्य अग्नियों से जले, उनकी अग्नियाँ बुझ गई हैं और एक बार बुझकर फिर नहीं जली । लेकिन प्रेमाग्नि से जलाये हुए व्यक्तियों की अग्नि बुझ–बुझकर सुलगती रहती है। भाव यह है प्रेम व्यथा रह–रहकर कसकती रहती है, कभी शांत नहीं होती।

6. अपने आराध्य के प्रति अपनी अनन्य भाव की (भक्ति की) अभिव्यक्ति करते हुए रहीम कहते हैं कि मेरे नेत्रों में अपने प्रियतम की शोभा बसी हुई है, अंतः दुसरे अन्य देवों की शोभा इनमें किस प्रकार आ सकती है। जिस प्रकार कोई पथिक सराय को भरी हुई देखकर स्थानाभाव के कारण खुद ही वापस लौट जाता है उसी प्रकार किसी अन्य देव के लिए मेरे नेत्रों में कोई स्थान नहीं है। तात्पर्य यह है कि अपने आराध्य देव के अतिरिक्त मैं अन्य किसी देव की आराधना नहीं कर सकता।

7. वास्ताविक प्रेम तथा स्वार्थी प्रेम का वर्णन करते हुए रहीम कहते हैं कि मछली का प्रेमभाव धन्य है, क्योंकि जल से बिछुडते ही उसके प्राण चले जाते हैं। इसके विपरीत भौरों के स्वार्थी प्रेम के विषय में क्या कहा जाए, क्योंकि वह जीते जी कमल को छोडकर अन्यत्र अन्यपुष्पों पर जाकार बस जाता है। विशेष : साहित्य में मछली को आदर्श प्रेम एंव औरों को स्वार्थी प्रेम का प्रतीक माना गया है। प्रेम वर्णन में कई कवियों ने इन प्रतीकों का इस्तेमाल किया है।

8. प्रीति का स्वरूप बताते हुए रहीम कहते हैं कि गन्ने को जहाँ से भी खोजा जाए, वहीं उसमें रस का भंडार होता है, लेकिन जहाँ गन्ने में गाँठ होती है, वहाँ रस नहीं होता। यही स्थिति प्रीति की भी है। प्रीति में सर्वत्र परम आनंद का भंडार है। किंतु जब प्रीति में मनोमालिन्य हो जाता है तो उसमें आनंद नहीं रहता । यही मनोमालिन्य प्रीति को हानि पहुँचानेवाला होता है।

9. राम नाम की महिमा का वर्ण्न करते हुय रहीम कहते हैं ट्ट यदि महापापी के भी मुख से धोखे से श्रीराम का नाम निकल जाए तो वह भी पूर्ण मोक्ष पाप्त कर लेता है। विशेष : यह दोहा अजामिल की कथा पर आधारित है। अजामिल महापापी था। श्री विष्णु से तो वह उतना चिढता था कि उनका अपमान करने के लिए उसने अपने पुत्र का नाम ही नारायण रख दिया था।

जब वह मरने लगा तो पुत्रमोह के कारण उनके मुख से नारायण का नाम निकला, जिससे वह मोक्ष का अधिकारी बन गया।

10. दोहा छंद के स्वरूप का वर्णन करते हुए रहीम कहते हैं कि दोहे में गंभीर अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए कम से कम अक्षरों का प्रयोग होना चाहिए। वे थोडे से अक्षर कवि के गंभीर व्यक्तित्व को व्यक्त करने में उसी प्रकार सक्षम होने चाहिए, जिस प्रकार नट अपने शरीर को समेटकर तथा ऊँचा कूदकर चक्र से बाहर निकल जाता है।

एक अंक के प्रश्न:

1. रहीम का पूरा नाम लिखिए । उत्तर = अब्दुर्रहीम खानखाना
2. रहीम किसके दरबारी कवि थे। उत्तर = अकबर के
1. रहीम किसे बिना पूंछ और सींग के पशु मानते हैं?

   उत्तर:विद्या–बुद्दिविहीन, धर्म के जैसे दान आदि नहीं करनेवाला मनुष्य बिना पुंछ और सींग के पशु जैसे हैं।
4. किस बेल की कोई जड नहीं होती है? उत्तर ट्ट अमर बेल की
5. गन्ने में कहाँ रस नहीं होता है?

   उत्तर –जहाँ–जहाँ गांठ होती वहाँ रस नहीं होता है

सप्रसंग व्याख्या के प्रश्न:

1. रहीमन विद्या बुद्दि नहीं, नहीं धरम जस दान।
   भू पर जनम वृथा धरै, पसु बिन पूंछ विषान॥
2. अमर बेली बिन मूल की प्रति पालत है ताही।
   रहीमन एसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिए काहि॥
3. दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहि।
   जो रहीम नट कुंडलि, सिमिरि कू द कढि जाहिं॥

निबंधात्मक प्रश्न

1. कविवर रहीम के पठित दोहों का सार लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए

2. विद्या–बुद्धि, रीति–प्रीति, भक्ति एंव जीवन की नश्वरता के बारे में रहीम के विचारों को प्रस्तुत कीजिए ।
3. रहीम के पठित दोहों का सांक्षित्त सार लिखकर विशेषताएँ बताइए
4. कविवर रहीम के पठित दोहों का सांक्षित्त सार लिखिए ।

प्रस्तुति: डॉ.मंजुनाथ उडुपा

श्री वेंकटरमण स्वामी कॉलेज, बंट्वाल

****

5. परिचय

- **रामधारी सिंह दिनकर**

कवि परिचय :

आधुनिक हिंदी के छायावादोत्तर काव्यधारा के प्रसिद्ध कवि दिनकर की कविताओं में देश की समस्याओं और युग सत्य के प्रति जागरूकता है उनके काव्य में जीवन के विविध संदर्भों का विविधमुखी चित्रण मिलता है। उन्होंने प्राचीन मूल्यों को नए रूप में व्याख्या करने का सफल प्रयास किया है साथ ही नई समस्याओं को प्राचीन जीवन मूल्यों से जोड़ने का प्रयत्न किया है । इनकी प्रमुख कृतियाँ कुरूक्षेत्र, रश्मिरथी व उर्वशी आदि है । कुरूक्षेत्र में भीष्म पितामह का चित्रण है तो रश्मिरथी में कर्ण का चरित्रांकन है। उर्वशी में इन्होंने उर्वशी और पुरूरवा के प्रचीन कथा को नया अर्थ दिया है । बिहार के मुंगेर जिले में सन् १९०८ में जन्में कवि दिनकर की मृत्यु १९७४ में हुई।

दिनकर की प्रस्तुत कविता 'परिचय' एक विशिष्ट वस्तु को व्याख्यायित करती है। आत्मनिष्ठ शैली में लिखी गई यह कविता उनका ही परिचय देती है। प्रकृति के कई तत्वों के माध्यम से वे यह समझाना चाहते हैं कि उनका अस्तित्व कण- कण में है अर्थात् मानव और प्रकृति परस्पर

अन्योन्याश्रित हैं। वे मिट्टी,जल, फूल-पत्ते , पेड़- पौधे , संगीत ,अग्नि आदि तत्वों में अपना परिचय तलाशते हैं और मानव को संदेश देते है कि हम सब प्रकृति के कण- कण में समाए हैं। कोई भी तत्व व्यर्थ नहीं है। सबका अपना महत्व है। कवि को लगता है कि इस सृष्टि में उनका क्या स्थान है । आत्मावलोकन के दौरान उन्हें पता चलता है कि वे हर तत्व का अंग हैं अपनी और प्रकृति की सर्जनात्मक विशिष्टताओं अर्थात् प्रकृति अपने तत्वों का पोषण करती है तो कवि अपने भावों का पोषण करता है । उन्हीं की तुलना करते हुए कवि कहता हैं - मैं कौन हूँ? क्या मैं पानी का कण हूँ या पानी की राशि हूँ ? मैं तो स्वयं अपने अस्तित्व की छाया हूँ। जो स्वयं का ही आधार है। कहीं मैं अपने ही स्वप्नों में बंधा हुआ तो नहीं। यदि ऐसा है तो मैं एक सीमित वृत में सिमट गया हूँ। फिर वे कहते है नहीं मैं तो आकाश हूँ जो विस्तृत है जिसका न आदि है न अंत। कवि अपने आप को ज्योति पुंज अर्थात् शक्ति प्रदान कर प्रेरणा देने वाला मानते हैं। मैं अपने स्वरों , शब्दों के माध्यम से वीणा के हृदय में समाना चहाता हूँ ताकि मेरी सारी व्याकुलता वीणा के संगीत में , उसकी झंकार से बाहर आ सके। मैं अपने मन की ज्योति में ही भटक गया हूँ। मैं अपने प्रकाश में स्वयं को खोज रहा हूँ कभी लगता है कि सारा प्रकाश (ज्योति) मेरे भीतर ही हैं मैं ज्योति (ज्ञान) का भंडार हूँ।

कभी कवि को लगता है कि सारा विश्व उन्हें खोज रहा है। जैसे रात को आकाश तारे जलाकर उन्हें तलाश रहे हैं। तब उन्हें अपने अस्तित्व पर अभिमान होता है और वे कहते हैं कि कवि होने के नाते मैं सबके मन को उनके भावों को पढ़ने में सक्षम हैं। वे अपने आप को समझाने का प्रयास करते हैं मानव कितने बार जन्म लेकर मर चुका लेकिन आज तक कोई भी अपने सही रूप को से पहचान नहीं सका है। कवि इसी अगम को पाना चाहते हैं।फिर कवि कलियों की पंखडियों में ओस -कण को देखते हैं। उन्हें

उसमें इस संसार के सपने नज़र आते हैं लेकिन कली शाश्वत नहीं है, उसे झड़ना है। इस सत्य को हमें जानना है। जब कली खिलती है , इंसान बड़ा होता है। ये दोनों कई सपने देखते हैं। साथ ही ये दोनों (कली और इंसान) जानते हैं कि वे जीवन का उपहार हैं और एक न एक न दिन उनका अंत होगा।

कवि दुनिया के सुख दुख का चित्रण करते हैं इसलिए वे कहते हैं कि किसी के दुख, दर्द या दिल की कसक हैं जिसे उन्होंने कविता के रूप में निरूपित किया है। वे किसी का खोया हुआ प्यार भी हैं या फिर कभी किसी के कारण उन्हें किसी की बद्दुआ भी लगी है। वे कभी अपने आप को जंगल में पेड़ से झड़े फूल भी मानते हैं। जो भूमि पर अकेला गिरा पड़ा है। इस प्रकार वे जीवन में अपने आप को अकेला पाते हैं।

कवि अपने जीवन के मधुर क्षणों को, प्यार के उन पलों का स्मरण करते हैं जो आकर चला गया। खोने के लिए उस भार को वे ढो रहे हैं। उन क्षणों को याद कर वे रोते हैं। अपने प्रिय को याद कर आंसू बहाते हैं। उन्हीं आंसूओं को पिरोकर वे कविता करते हैं।

अब कवि अपने आपको सरल और सहज बनाते हुए अपने अभिमान और गर्व को त्यागते हुए महसूस करते हैं कि आखिर मैं क्या दूँ? मैं तो धूल का एक कण हूँ जो आज उड़कर कभी ऊपर उठता है तो फिर नीचे गिर जाता है। मैं कौन हूँ, मेरी पहचान यह मिट्टी ही दे सकती है जिसमें मेरा कण है। मैं तो कितनी बार उसमें मिल चुका हूँ।

अंत में कवि की चिंता यही है कि यह दुनिया उन्हें नज़र अंदाज़ न करे। कोई उन्हें घृणा से न देखे क्योंकि वे वो मानव है जिन्होंने क्षणिक समस्याओं से परिपूर्ण जीवन को , इस सृष्टि के श्रृंगार रूप को चित्रित किया है। उनकी कविताएं जीवन का श्रंगार हैं इसलिएवे पाठकों से विनम्र निवेदन करते हैं कि उन्हें धूल में मिलने न दें बल्कि उन्हें एक पहचान दें। वे

मानव के गले का हार हैं। वे अपनी रचनाओं से इस सृष्टि और जीवन को सुंदर बनाते हैं। यही कवि का सही परिचय है।

एक अंक के प्रश्न :

१) 'परिचय कविता कौन सी शैली में लिखी गई है? (आत्मनिष्ठ शैली में)

२) ' परिचय' कविता के कवि कौन है? (रामधारी सिंह दिनकर)

३) हमारी पहचान कौन दे सकता है ? (मिट्टी)

४) कवि किस ज्योति में भटक गया है ? (मन की ज्योति)

५) कली और इंसान क्या जानते है? (जीवन नश्वर है)

सप्रसंग व्याख्य के प्रश्न :

१. सलिल - कण हूँ कि पारावार हूँ ..... विस्तार हूँ मैं।

२. कली की पंखड़ी पर ओस -कण ..... उपहार हूँ मैं।

३. मधुर जीवन हुआ कुछ प्राण..... हार हूँ मैं

४. न देखे विश्व पर, मुझको घृणा से ..... हार हूँ मैं

निबंधात्मक प्रश्न :

१) 'परिचय' कविता का सारांश लिखकर काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

२) कवि ने अपना परिचय किन किन तत्वों से करवाया है। सविस्तार वर्णन कीजिए।

प्रस्तुति : डॉ. नागरत्ना राव

हिंदी विभागाध्यक्षा, यूनिवर्सिटी कॉलेज, मंगलूरु

****

6. प्रतिबिंब

- **सुमित्रानंदन पंत**

कवि परिचय:

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंतजी छायावादी युग के प्रतिष्ठित कवि हैं । उनका जन्म 1900ई में उत्तरप्रदेश के जिला अलमोड़ा में स्थित कौसानी गाँव में हुआ था । यह स्थान अपनी प्राकृतिक शोभा के लिए अत्यंत प्रसिद्ध है । प्रकृति के प्रति पंत का अनुराग, जो उनके काव्य की प्रमुखतम चेतना है, इसी नैसर्गिक एवं प्राकृतिक सौंदर्य के कारण हुआ माँ की वात्सल्यमयी क्रीडा छिन जानेपर बालक पंत को इसी प्रकृति ने असीम आंचल में लेकर माँ का सा दुलार वत्सलता प्रदान की । यदि माता का स्वर्गवास न हुआ होता तो निरचय ही पंत अपना अनुराग प्रकृति के प्रति न उंडेल पाते और प्रकृति के अभाव में पंत–काम का क्या रूप होता? वे कवि बन भी पाते अथवा नही ?।

कम की दृष्ति से पंत की काव्य–कृतियाँ ये हैं–वीणा, ग्रंथी, पल्लव, गुंजन, ज्योत्स्ना, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्य, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूली, उत्तरा, रजतशिखर, शिल्पी, सौंवर्ण, प्रातिमा, वाणी, कला और बूढा चाँद, लोकायतन ।इनके अतिरिक्त पाँच कविता– संग्रह है– पल्लविनी, आधुनिक कवि भाग 2, चिदम्बरा, रस्मिबंध और तारापथ ।

सारांश

प्रस्तुत कविता प्रतिबिम्ब पल्लविनी में सकलित है । इसमें कवि ने उस विराट प्रकृति में अपनी माँ को देखने की महान संकल्पना को प्रस्तुत किया है । इस प्रकार मानव और प्रकृति के बीच के अटूट रिश्ते की अभिव्यक्ति उन्होंने दी है । प्रकृति को भी माँ मानने की उदात्त संकल्पता से प्रशति के नाम पर प्रकृति के आन्धाबुन्ध शोषण के खिलाफ मानवमन को जागृत करने का महत्वपूर्ण काम भी उन्होंने किया है । कविता की बालिका हर बच्चे की तरह बचपन में आसमान की चाँद–कला को लेने के लिए

रोती थी । तब माँ ने दर्पण में शशि की छाव दिखाकर उसे मनाया था । अनभिज्ञा (अज्ञान) बालिका प्रतिबिंब को असली समझकर उससे कीडा करती थी । शशिबाला अपने हाथ मे है, समझकर आनंदित होती थी । धीरे धीरे माँ ज्ञान का अपना दिव्य् द्वार खोलती रही और ज्ञान का प्रकाशा विखेरती रही । बालिक बड़ी हो गई और अब उसकी यही चाह है कि जगत के निर्मल दर्पण में प्रकृति माँ का जो प्रतिबिंब पडा है, उसमें अपनी माँ को कब देख सकेगी? प्रकृति माँ और जननी के अभिन्न संबंध की यह भावना सचमुच बेजोड है

विशेषताएँ:

कवि सुमित्रानंदन पंत जी की यह कविता प्राकृतिक रहस्यवाद से भरपूर है । शैशव में शशि के प्रतिबिम्ब को देखकर कवि का बाल मन प्रश्न करता है माँ वह दिन कब आएगा?। यह प्रश्न प्रकृति पटल पर फैली हुई अनंत की ज्योती से मिलने का ही संदेश करता है । कण–कण में व्याप्त अमरत्व का उसे आभास होते ही मिलने के लिए व्याकुल हो जाता है । यही जीव की स्थिति है । जब तक उसे प्रिय का साहचर्य नही प्राप्त होता तब तक उसे चैन कहाँ ? समय आने पर उसे अपनी भूल का पता चलता है । उसकी यह व्यथा प्रभु के रहस्यमय स्पर्श से समाप्त हो जाती है । उसका स्पर्श होते ही निद्रा और सभी माया बन्धन टूट जाते है ।

कवि इस कविता के माध्यम से यह भी बताना चाहता है कि इस माया रूपी विश्व से परे जो सौंदर्य लोक है, जीव उसी का पथिक है अर्थात् अंत में सभी को वही जाना होता है । कवि इसमें अपने को एक बालिका का रूप में और ईश्वर को माँ के रूप में देखते हैं । कविता के अंत में कवि ईश्वर के साक्षात दर्शन की कामना करता है और कहते है कि मैं तुम्हारा ही तो अंश हूँ अतः मैं तुम्हारा निज रूप प्रत्यक्ष देखना चाहता हूँ ।

एक अंक के प्रश्न :

१. प्रतिबिम्ब कविता के कवि का नाम लिखिए ? –सूमित्रानंदनपंत

२. सुमित्रानंदनपंत किस युग के प्रतिष्टित कवि है? –छायावादीयुग के

३. प्रतिबिंब कविता संग्रह किस मे संकलित है – पल्लविनी में

४. प्रतिबिम्ब कविता की बालिका हर बच्चे की तरह क्यों रोयी थी?

आसमान की चांद–कला को लेने के लिए रोयी थी ।

५ .अज्ञान बालिका प्रतिबिंब को असली समझकर उससे कया करती थी?

क्रीडा करती थी ।

सप्रसंग व्याख्य के प्रश्न :

१. कुमुद कला को लेने जब मैं––––रहती है नभ के बन में !
२. पर शिशुतावश नहीं सुना था––––मैं तब कितनी अनभिज्ञा थी ।

३. माँ वह दिन कब आवेगा जब–––––जग के निर्मल दर्पण में ?

निबंधात्मक प्रश्न :

१. प्रतिबिम्ब कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।

२. प्रकृति माँ और जननी के अभिन्न संबंध की भावना सचमुच बेजोड है

प्रतिबिम्ब कविता के आधार पर लिखिए ।

३. प्रतिबिम्ब कविता सार लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

प्रस्तुति :डॉ.रक्षितकुमार शेट्टी
श्री शारदा कॉलेज, बसरूरु

****

7. ओ मेघ

-गजानन माधव मुक्तिबोध

कवि परिचय :

प्रयोगवादी काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म १९१७ ई. में मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले श्योपुर नामक स्थान में हुआ था । इनके पिता पुलिस विभाग के अधिकारी थे । अतः निरंतर होने वाले स्थानंतरण के कारण इनकी पढ़ाई नियमित व व्यवस्थित रूप से नहीं हो पाई । १९५४ ई. में इन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से एम. ए. (हिंदी) करने के बाद राजनाद गाँव के डिग्री कॉलेज में अध्यापन का कार्य किया । इन्हें अध्यापन,लेखन एवं पत्रकारिता सभी क्षेत्रों में अपनी योग्यता, प्रतिभा एवं कार्य क्षमता का परिचय दिया । मुक्तिबोध को जीवंन पर्यत संघर्ष करना पड़ा और संघर्षशीलता ने इन्होंने चिंतनशील एवं जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने को प्रेरित किया । १९६४ ई. में यह महान चिंतक दार्शनिक, पत्रकार एवं सजग लेखक तथा कवि इस संसार से चल बसा ।

रचनाएँ-

कविता -संग्रह - चाँद का मुँह टेढ़ा, भूरी-भूरी खाक -धूल ।कथा साहित्य- काठ का सपना, विपात्र, सतह से उठता आदमी। आलोचना- कामायनी -एक पुनर्विचार, नई कविता का आत्मसंघर्ष, नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, समीक्षा की समस्याएँ एक साहित्यिक की डायरी।भारत इतिहास और संस्कृति

काव्यगत विशेषताएँ:

मुक्तिबोध प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रमुख सूत्रधारों में थे । इनकी प्रतिभा का परिचय अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक ' से मिलता है । उनकी कविता में निहित मराठी संरचना से प्रभावित लंबे वाक्यों ने आम पाठकों के

लिए कठिन बनाया, लेकिन उनमें भावनात्मक और विचारात्मक उर्जा अटूट थी, जैसे कोई नैसर्गिक अंत स्रोत हो जो कभी चूकता ही नहीं बल्कि लगातार अधिकाधिक वेग और तीव्रता के साथ उमड़ता चला आता है। यह उर्जा अनेकानेक कल्पना - चित्रों और फैंटेसियों का आकार ग्रहण कर लेती है। इनकी रचनात्मक ऊर्जा का एक बड़ा अंश आलोचनात्मक लेखन और साहित्य- संबंधी चिंतन में सक्रिय रहा। ये पत्रकार भी थे। इनकी कविताओं में जीवन का विविधमुखी चित्रण है । इन्होंने राजनीतिक विषयों , अंर्तराष्ट्रीय परिदृश्य तथा देश की आर्थिक समस्याओं पर लगातार लिखा है

भाषा शैली - इनकी भाषा शैली उत्कृष्ट है। भावों के अनुरूप शब्दों को गाढ़ना और उसका परिष्कार करके उसे भाषा में प्रयुक्त करना इनके भाषा सौन्दर्य की अद्‌भुत विशेषता है। इन्होंने तत्सम, शब्दों के साथ- साथ उर्दू, अरबी , फारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया है।

व्याख्या : मानव,प्रकृति का अभिन्न अंग है। लेकिन जीवन की रफ्तार में इंसान ने प्रकृति को अनदेखा कर दिया है। इस लिए कवि इस कविता के माध्यम से हमारा ध्यान मेघों के प्रति आकर्षित करते है जो हमारे जीवन का आधार है।

कवि ने अपनी काल्पनिक शक्ति को यथार्थ में पिरोते हुए कहा है कि बादलों का आकाश से रिश्ता अंनतकाल से चला आ रहा है। आकाश रूपी घर में बादलों का अस्थायी निवास रहता है। जब भी मेघों का पदार्पण इस आकाश में होता है तो हर बार वे अपने नए रूप में अवतरित होते है। यही मेघ जब धरती पर बरसते है तो वे अपने अस्तित्व को पूर्णतः धरती पर विलीन कर देते है। एक बार पूरी तरह से धरती में विलीन होने के उपरांत आकाश में बादलों का पुनर्निर्माण शुरू हो जाता है अर्थात् वे उमड़-घुमड़कर फिर से आकाश में एकत्रित हो जाते हैं। वे नए सिरे से नए रूप को धारण कर धरती पर फिर बरसते हैं। मेघों की यह यात्रा आकाश में

चिरकालीन है । दूसरी ओर कवि ने बादलों की तुलना स्वप्नों से करते हुए कहा है कि जिस प्रकार मनुष्य नींद में स्वप्न देखता है । उस समय वह स्वप्न उसके लिए गहन सत्य सा प्रतीत होता है । लेकिन जब वह निद्रित स्वप्न से जागता है तो उन स्वप्नों का अस्तित्व उसके लिए शून्य हो जाता है । जब मनुष्य दोबारा स्वप्न निद्रा में डूब जाता है तो पुनः वे स्वप्न अपने नए रूप व आकार में दृष्टिगोचर होते है । पुराने स्वप्नों का नए संदर्भों में कोई महत्व नहीं रह जाता है । सपनों का दायरा सदैव एक ही सीमा में बंधा नहीं रहता है । हर बार उसका अपना अलग ही रूप, रंग व आकार निर्धारित होता है । ठीक उसी प्रकार मेघ का बरसना हर बार नया सा लगता है ।

कवि कहते है कि मेघ धरती को सौंदर्य प्रदान करने का एक प्रमुख सृजनात्मक स्रोत है । यह बूँदों के रूप में बरस कर धरती को नवरस प्रदान करता है । मेघ धरती पर एक सरस दृश्य उपस्थित करता है । मेघ समूचे रूप में बरस कर अपने चरित को पूर्ण करता है । उसका हर बार नए रूप में बरसना इस बात की ओर इंगित करता है कि अपने आप को संपूर्णता में मिटाना ही उसके जीने का कारण है ।

बादल को अपने नित्य नए मौलिक रूपों में परिवर्तन करने का अनुभव प्राप्त है । इस कारण जब भी वह आता है तो अपने पुराने रूप का परित्याग कर ही बरसता है जिस कारण वह नवीन और मौलिक सा प्रतीत होता है । अपने को पूर्ण रूप से धरती पर विलीन कर नए अवतार में वापस आने की उसकी प्रक्रिया उसके लिए नशे के समान है । अपने मौलिक रूपों में नित्य नए परिवर्तन उसकी आत्मा का एक अंश है । कहना उचित होगा कि यह उसका जन्मजात गुण है। जिसे वह छोड़ नहीं सकता । वह किसी भी बाहरी दबाव से उत्तेजित नहीं होता । मेघ को 'प्रपितामह' के रूप में संबोधित करते हुए कवि कहते है कि मेरे अंदर की कविता का सृजन,प्रेरणा व उत्तेजना का प्रस्फुटन तुम्हारे कारण ही तो है । कवि आगे कहते है कि मेरे अंदर की भावनाओं को मचलती हुई कविता की पंक्तियों के रूप में आविष्कृत करने की प्रेरणा तुम्हीं हो । जिस प्रकार बादल उमड़ घुमड़कर

एकत्रित होकर बाद में बरसता है ठीक वैसे ही कविता की पृष्ठभूमि पर विचारों का मंथन व अनुभूतियों को सहजता से घुमड़ने की जरूरत होती है । इसके बाद ही कविता का आविष्कार होता है । इसी प्रकार एक बार घनघोर रूप से बरस लेने के बाद बादल का कुछ भी अपना शेष नहीं रह जाता है । फिर से बरसने के लिए उसे नए सिरे से एकत्रित होने की आवश्यकता पड़ती है । इस नए रूप का उसके पूर्व से कोई ताल्लुक नहीं रहता। कविता का सृजन भी कुछ इसी प्रकार है । एक बार पुरानी हुई कविता का नई कविता से कोई संबंध नहीं रह जाता । इस लिए तो बादल और कविता सदैव से ही नए रूप में ही अवतरित होते है । इसलिए वे 'नए' कहलाते है ।

विशेषता : 'मेघ' कविता के माध्यम से कवि इस तथ्य को उजागर करने का प्रयास करते है कि सृजनात्मक पहलुओं की निरंतरता के कारण कविता और बादल में सदैव नवीनता होती है जो उन्हें सजीव बनाए रखती है । इसलिए वह एक विशिष्ट कृति कहलाती है । मेघ और कविता एक ही सिक्के के दो पहलू है ।

एक अंक के प्रश्न:

१. ओ मेघ! कविता के रचनाकार कौन है ?

(गजानन माधव मुक्तिबोध)

२. कौन लौटते हुए स्वप्न के गहन सत्य सा प्रतीत होता है । (मेघ)

३. कवि ने मेघ को किसके प्रतीक के रूप में माना है ?

(मन में घुलती हुई पंक्ति के प्रतीक के रूप में)

४. मेघ को किसका नशा है ? (जन्म ग्रहण करने का)

५. कवि ने मेघ को किस रूप में संबोधित किया है?

(प्रपितामह के प्रपितामह)

सप्रसंग व्याख्य के प्रश्न :

क) पुराने हो पर बार-बार आते हो.....बरस- बरस कर

ख) खूब अनुभवी बहुत ..... करने का तुमको एक नशा है

ग) तुम श्रेयस की उत्तेजना .....नए- नए तुम कहलाते हो ।

निबंधात्मक प्रश्न :

१) ओ मेघ! कविता का सारांश लिखकर काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

२) मेघ और कवि की कविता एक ही सिक्के के दो पहलू है - स्पष्ट कीजिए ।

प्रस्तुति: वैशाली सालियन , यूनिवर्सिटी इवनिंग कॉलेज मंगलूरु

****

8. धब्बा

-केदारनाथ सिंह

कवि परिचय

हिन्दी कविता ने समय के साथ–साथ अपनी विषय–वस्तु को संवारा, निखारा और विश्लेषित किया है । इसी कारण हिन्दी के कवियों ने समाज की परिस्थितियों के अनुसार काव्य को निर्मित किया । केदारनाथ सिंह समकालीन हिन्दी कवि हैं जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज के यथार्थ को चित्रित किया है । हिन्दी में इनकी काव्य यात्रा 1958 में 'तीसरा सप्तक' से शुरू होती है । 1960 में इनका प्रथम काव्य संग्रह 'अभी बिल्कुल अभी' प्रकाशित हुआ । उनका दृष्टिकोण आशावादी रहा है ।

प्रस्तुत कविता 'धब्बा' में वे एक तरफ आधुनिक आत्मकेन्द्रित मानव की स्वार्थपरता का वर्णन करते हैं तो दूसरी तरफ उनमें मानवीयता जगाने का प्रयास करते हैं । आज मानव अपने विकास में इतना तल्लीन हो गया है कि वह भूल गया कि वह मशीन नहीं मानव है । मशीन बन जाने के कारण वह भावहीन हो गया है और कवि इस कविता में उसी का एक उदाहरण देते हैं–

रास्ते में कोई दुर्घटना घटी । खून का धब्बा यानी मानवीयता घायल हो गई है । आज किसी का भी ध्यान उसकी ओर नहीं गया । न किसी को उसकी चिंता । सब उसे देखते हैं और निकल जाते हैं

कवि कहते हैं– सड़क के बीच सुबह से खून का धब्बा पड़ा हुआ है । पहले वह चमक रहा था । फिर वह लाल धब्बा भूरा हो गया और फिर धीरे–धीरे काला होता गया । ऐसा नहीं कि किसी ने उस धब्बे को नहीं देखा, सब उसे देखकर एक पल के लिए खड़े हो जाते । आसपास देखते कि कहीं किसी ने उनको देखा तो नहीं फिर आँ बचाकर निकल जाते । खड़े होने का मतलब है कि उसमें अब भी थोड़ी मानवीयता बाकी है । कवि ने देखा कि दिन भर यही सिलसिला जारी रहा । किसी ने उसे खून

के धब्बे को हटाने की कोशिश नहीं की । लेकिन खून का धब्बा, यानी मानवीयता इसी ताक में थी कि कोई तो आकर उसे अपने हाथों से उठाएगा । वह किसी के सहारे के लिए तरसता रहा । कोई नहीं आया । प्रकृति ने देखा कि मानव की मानवीयता अब नहीं रही तो उसने ही एक उपाय सोचा । दिन भर की तपती गरमी के बाद ज़ोर से बारिश आई । बारिश के पानी ने धीरे से आकर उस धब्बे को छुआ, स्पर्श कर उठाया, गले लगाया, उस जगह को साफ किया । अपने गीले हाथों से वर्षा के पानी ने धो डाला । तब जाकर खून का धब्बा मिट गया । अब बारिश खुश हुआ कि उसने धरती पर से एक अमानवीयता की घटना को मिटा डाला । धब्बा खुश हुआ कि वह दिन भर सड़क पर अकेले पड़ा रहा और अंततः उसे किसी ने सहारा तो दिया । इस प्रकार कवि समकालीन समाज की असुरक्षा और दानवीयता का चित्रण कर भावनाहीन मनुष्य को संवेदनशील बनाना चाहते हैं ।

एक अंक के प्रश्न :

1. केदारनाथ सिंह किस काव्यधारा के कवि हैं?
   केदारनाथ सिंह समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर ।
2. केदारनाथ सिंह का प्रथम काव्य संग्रह कौन सा है?
   केदारनाथ सिंह का प्रथम काव्य संग्रह 'अभी बिल्कुल अभी'है।
3. 'धब्बा' कविता में कवि का किस प्रकार का भाव है?
   'धब्बा' कविता में कवि का आशावादी भाव है ।
4. 'धब्बा' कविता किस शैली में लिखी गयी है?
   'धब्बा' कविता सशक्त बिम्बात्मक कविता है ।
5. 'धब्बा' कविता में कवि मानव की जिन्दगी के किस पक्ष को उजागर करते हैं?
   कवि मानव की मूल्य विघटित जिन्दगी को उजागर करते हैं ।

निबंधात्मक प्रश्न :

1. 'धब्बा' कविता में कवि ने समकालीन समाज की किस समस्या का चित्रण किया है? वर्णन कीजिए ।
2. 'धब्बा'कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए ।

सप्रसंग व्याख्या के प्रश्न :

१. सुबह से पड़ा था.....होता जा रहा था ।

२. उसने धीरे–से धब्बे.....खूने के धब्बे का ।

प्रस्तुति: डॉ.नागरत्ना राव

हिन्दी विभागाध्यक्ष, विश्वविद्यालय कॉलेज, मंगलूरु

****

9. यह महज कोरा कागज़ नहीं

-भगवंत रावत

कवि परिचय

कवि समाज का अभिन्न अंग है जो अपनी अनुभूतियों को कविता में उतारता है । लिखना उसका काम है ताकि वह अपने पाठकों का मार्गदर्शन कर सके । कवि की प्रतिभा, लोकमंगल की भावना एवं अपने अनुभवों को अपने तक न रख पाने के कारण वह लिख डालता है । भगवत रावत जो हिन्दी के समकालीन कवि हैं, एक कवि के अंतर्मुख का बहिर्मुख करने का प्रयास करते हैं । नित नवीन गतिविधियाँ समाज की सोच को बदल रही है, कवि उनसे आन्दोलित होकर कुछ लिख डालने के लिए प्रतिबद्ध हो ही जाता है । कविता में ही उसे अपने जीवन की सार्थकता नज़र आती है । कवि की कविता लिखने की इसी प्रतिबद्धता को लेकर कवि कहते हैं–

कवि कोरे कागज़ों में अपनी भावनाओं को काले अक्षरों में लिख देता है । कविता लिखने के बाद वह केवल कोरा कागज़ नहीं बल्कि उन कागज़ों को आदमी ने ही बनाया । जब वह बना था तब भले ही कोरा था पर उसमें कवि ने अपने विचारों और भावनाओं को मूर्त रूप दे दिया । अपनी भावनाओं को लिखने से पूर्व वह कागज़ केवल कोरा कागज़ नहीं बल्कि उसके रेशे–रेशे को भी आदमी ने ही बनाया है ।

जिन बातों को कहने मात्र से उसे तसल्ली नहीं मिलती वह उन्हें लिखाकर समाधान पाता है । लिखना उसका काम है और जरूरत भी । तभी वह समाज को अपने विचारों से अवगत करा पाएगा । आज हम ऐसे संधिकाल में जी रहे हैं जहाँ हम न पूरी तरह से मानव है और न पूरा दानव । दोनों के बीच फँसकए मानव असंवेदनशील हो गया है । हर तरफ अन्याय, अनीति, शोषण का बोलबाला है । सब देखकर, सहन कर चुप हैं । लेकिन कवि की लेखनी ऐसा नहीं कर सकती । लिखे बिना उसे चैन नहीं । काव्य सृजन करना ही कवि के अस्तित्व की पहचान है । आज हम

पशुओं के लिए अभयारण्य बना रहे हैं और मानवों को घर से बाहर निकाल रहे हैं, अर्थात् बूढ़े माँ–बाप को वृद्धाश्रम भेज रहे हैं । मानव की ऐसी काली करतूतों को देखकर कवि का चुप रहना नामुमकिन है । कई बार तो अपराधी खुला घूमता है और निरपराधी को जेल हो जाती है । इसलिए आदमी के हाथ खून से रंगे हुए हैं । खून की एक–एक बूँद एक–एक कहानी बयान करती है । यहाँ कवि मशहूर नुक्कड़ नाटककार सफदर हाश्मी की अमानवीय हत्या को लेकर सशान्त है । ऐसे संदर्भ में कवि की कविता समाज की सच्चाई बयान करने के कारण अमर हो जाती है । सच्चाई लिखने पर मारा जाता है, यह सोचकर लिखना नहीं छोड़ना है क्योंकि लिखा इसलिए जाता है ताकि जनता जागरूक बने । अतः कवि का दायित्व है लिखना । इस प्रकार कवि, एक कवि की लिखावट की सार्थकता इस कविता के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं ।

एक अंक के प्रश्न :

१. भगवत रावत की कविता किस प्रकार की है?
   भगवत रावत की प्रतिबद्ध कविता है ।
२. 'यह महज़ कोरा कागज़ नहीं' का मुख्य विषय क्या है?
   'यह महज़ कोरा कागज़ नहीं' में कवि के सृजन की अनिवार्यता उसके पीछे की घटनाओं का वर्णन है ।
३. 'कागज़' किसका प्रतीक है?
   मानव की मेहनत और विचार का प्रतीक है ।
४. कवि के अनुसार कागज़ की क्या विशेषता है?
   कवि के अनुसार कागज़ आदमी के हाथों से बना एक साफ सुथरा मन
५. भगवत रावत के अनुसार कवि का दायित्व क्या है?
   लिखना ही कवि का दायित्व है ।

निबंधात्मक प्रश्न :

1. 'यह महज़ कोरा कागज़ नहीं' के अनुसार कवि के दायित्व को समझाइए ।
2. 'यह महज़ कोरा कागज़ नहीं' में कवि क्या बताना चाहते हैं? वर्णन कीजिए ।
3. 'यह महज़ कोरा कागज़ नहीं' का मूल भाव स्पष्ट कीजिए ।

सप्रसंग व्याख्या के प्रश्न :

1. आदमी के हाथों.....तरह जाग्रत करता है ।
2. खासकर ऐसे समय.....बनाया जा रहा हो ।
3. इसलिए नहीं कि.....भी लिखता है ।

प्रस्तुति: डॉ.नागरत्ना राव

हिन्दी विभागाध्यक्ष, विश्वविद्यालय कॉलेज, मंगलूरु

10. भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है ?

-भारतेंदु हरिश्चंद्र

लेखक परिचय

भारतेंदु हरिश्चंद्र को 'आधुनिक हिन्दी के जन्मदता ' तथा 'वर्तमान हिन्दी गद्य के प्रवर्तक' माना जाता है।भारतेंदु का गहरा प्रभाव हिन्दी भाषा और साहित्य पर पडा।उन्होंने जिस प्रकार गद्य की भाषा को परिमार्जित करके उसे बहुत ही चलता,मधुर और स्वच्छ रूप दिया,उसी प्रकार हिन्दी साहित्य को भी नये मार्ग पर लाकर खडा किया।

कृतियाँ : नाटक :अंधेर नगरी, सत्य हरिश्चंद्र,भारत दुर्दशा, श्री चंद्रावली इत्यादि | काव्य : प्रेम माधुरी,प्रेमतरंग ,प्रेमप्रलाप ,होली इत्यादि

सारांश :सन १८८४ में बलिया में भाषण देते भारतेंदु कहते हैं- आज बढे आनंद का दिन है कि इस छोटे से नगर बलिया में हम इतने मनुष्यों को एक बडे उत्साह पर एक स्थान पर देखते हैं। इस उत्साह का मूल कारण जो हमने खोजा तो प्रकट हो गया कि इस देश के भाग्य से आजकल आज यहाँ सारा समाज ही एकत्र है।राबर्ट साहब बहादुर जैसे उत्साही कलेक्टर जहाँ हो वहाँ क्यों न ऐसा समाज हो। आलस्य भारतवासियों का स्वभाव सहज गुण है।जब आर्य लोग हिन्दुस्तान आकर बसे थे तभी से भारतीय लोग आलसी हैं। आज सारे विश्व में उन्नति की घुडदौड हो रही है। लेकिन हमलोग प्रयत्न-परिश्रम किये बिना चुपचाप बैठे हैं जिनसे हमें लाज नहीं आती!यह समय ऐसा है कि जो पीचे रह जायेगा फिर कोटि उपाय किए भी आगे न बढ सकेगा। लूट की इस बरसात में भी जिसके सिर पर कम्बख्ती का छाता और आँखों में भी मूर्खता की पट्टी बँधी रहे उस पर ईष्वर का कोप कहना चाहिए।भागवत में कहा गया है कि पहले तो मनुष्य जन्म ही दुर्लभ है सो मिला और उस पर मेरी अनुकूलता। इतना सामान पाकर भी मनुष्य इस संसार सागर के पार न जाये उसको आत्महत्या कहना चाहिए।वही दशा इस

समय हिंदुस्तान की है।अंग्रेजों के राज्य में सब प्रकार का सामान और अवसर पाकर भी हम लोग जो इस समय उन्नति न करें तो वह हमारे केवल अभाग्य और परमेश्वर का कोप ही है। विलायत में गाडी के कोचवान भी अखबार पढते हैं। जब मालिक उतरकर किसी दोस्त के यहाँ गया उसी समय कोचवान ने गद्दी के नीचे से अखबार निकाला।यहाँ उतनी देर कोचवान हुक्का पिएगा या निकम्मी गप्प करेगा।वहाँ के लोग गप्प ही में देश के प्रबंध छाँटते हैं अर्थात वहाँ के लोगों का यह सिद्धांत है कि एक क्षण भी व्यर्थ न जाये।उसके बदले यहाँ के लोगों को जितना निकम्मापन हो उतना ही बडा अमीर समझा जाता है। आलस्य यहाँ इतना बढ गया कि मलूकदास ने यह दोहा ही बना डाला- "अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम । दास मलूका कहि गये सबके दाता राम।"

आजकल चारों ओर आँख उठाकर देखिए तो बिना काम करनेवालों का ही कारोबार चलता है।चारों ओर दरिद्रता की आग लगी हुई है।यहाँ मनुष्य दिन-दिन बढते जाते हैं और रुपया दिन-दिन कम होता जाता है।सो अब बिना ऐसा उपाय किए काम नहीं चलेगा कि रुपया भी बढे और वह रुपया बिना बुद्धि के न बढेगा। भाइयों,मत यह आशा रखो कि पंडित जी कथा में ऐसा उपाय बतायेंगे कि देश का रुपया और बुद्धि बढे।तुम आप ही कमर कसो,आलस्य छोडो,परिश्रम करो। दौडो, इस घुडदौड में जो पीछे पडे वह फिर रसातल ही पहुँचेगा। हमें देश को ऐसे सुधरना चाहिए कि सब बात में उन्नति हो जैसे धर्म–शिष्टाचार में,चाल-चलन में, समाज में, स्त्री-पुरुष में, सब जाति-देश में उन्नति हो।जो लोग अपने को देश के हितैषी मानते हों वे अपने सुख को होम करके,अपने धन और मान का बलिदान करके कमर कसके उठें।अपनी खराबियों के मूल कारणों को खोजो। कोई धर्म की आड में,कोई सुख की आड में छिपे हैं। उन चोरों को वहाँ से पकडकर लाओ और बाँधकर कैद करो।इस समय जो बातें तुम्हारे उन्नति के पथ का काँटा हों

उनकी जड खोदकर फेंक दो।सब सुन्नियों का मूल धर्म है। अत: सबसे पहले धर्म की ही उन्नति करनी उचित है। अंग्रेजों की धर्मनीति और राजनीति परस्पर मिली है।इससे ही उनकी उन्नति हुई है।भारतीय धर्म की आड में नाना प्रकार की बाधायें भरी हुई हैं।हमारे बुद्धिमान मुनि-महर्षियों ने जीवन की रीति-रिवाज़ बनाई हैं उनमें जो देश और काल के अनुकूल और उपकारी हों उनका ग्रहण कीजिए।लडकों की छोटेपन ही में शादी करके उनका बल,धीरज, आयुष्य सब मत घटाइए। उनके शरीर पुष्ट होने दीजिए।उन्हें नोन,तेल,लकडी की फिक्र करने की बुद्धि सीख लेने दीजिए।बहुविवाह आदि बुरी प्रथा को छोडिए।लडकियों को भी पढाइए कि वे अपना देश और कुल-धर्म सीखें, पति की भक्ति करें और लड्कों को सहज में शिक्षा दें।लोग आपस में बैर छोड दें क्योंकि यह समय इन झगडों का नहीं।अब आपस में मिलिए,कोई भी ऊँचा-नीचा हो उसका गौर करें। मुसलमान भाइयों को भी उचित है कि इस हिंदुस्तान में बसकर वे लोग हिंदुओं को नीचा समझना छोड दें।ठीक भाइयों की तरह हिंदुओं से बरताव करें। ऐसी बात जो दूसरों की जी दुखनेवाली हो कभी न करें।

अपने लडकों को अच्छी तालीम दो।सौ-सौ महलों के लाड-प्यार, दुनिया से बेखबर रहने की राह मत दिखलाओ।भाई हिंदुओं, तुम भी मतमतांतरों का आग्रह छोडो।आपस में प्रेम बढाओ।जो हिंदुस्तान में रहे चाहे किसी जाति-रंग का हो वह हिंदू है और उसकी सहायता करो। लेकिन अफसोस की बात यह है कि भारतवासी अपने निज के काम की वस्तु भी नहीं बना सकते।भाइयों, अब तो नींद से जागो। अपने देश की सब प्रकार से उन्नति करो जिसमें तुम्हारी भलाई हो।परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा मत रखो,अपने में अपनी भाषा में उन्नति करो।

उपसंहार : भारतेंदु से सन १८८४ में बलिया में दिया गया यह व्याख्यान उनकी करुणा और अपूर्व देशप्रेम का उज्वल उदाहरण है जिससे आज के भारत को भी रोशनी मिलती है। यह व्याख्यान देश के प्रति उनके गहरे प्रेम और चिंतन का परिणाम है जो नयी पीढी को हिन्दी की उस उज्वल परंपरा से जोडता है जो साहित्य को कोरे मनोरंजन से कहीं ऊपर उठाकर उसे जनता की चित्तवृत्तियों का विकास करनेवाला माध्यम बनाती है।

एक वाक्य के प्रश्न :

1. 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?' पाठ के लेखक कौन है?

   -भारतेंदु हरिश्चंद्र

2. किसको 'आधुनिक हिन्दी का जन्मदाता' माना जाता है?

   भारतेंदु हरिश्चंद्र

3. भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने अपना व्याख्यान कहाँ दिया था?- बलिया में

4. भारतेंदु के अनुसार सब सुन्नियों का मूल क्या है? - धर्म

5. भारतेंदु किसका भरोसा मत रखने की सलाह देते हैं ?

   - परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा

निबंधात्मक प्रश्न:

1. 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?' पाठ का सारांश लिखिए ।
2. भारतेंदु जी के अनुसार भारत देश की उन्नति केलिए हमें क्या करना चाहिए? अपने शब्दों में लिखिए।

टिप्पणी के प्रश्न :

1. भारतेंदु के अनुसार भारतवर्ष के पिछडेपन के कारण
2. भारतवर्ष की उन्नति के लिए भारतेंदु की सुझाव

प्रस्तुति: डॉ.दुर्गारत्ना.सी

हिन्दी विभागाध्यक्षा, विवेकानंद कॉलेज, पुत्तूरु

11. भय

- **रामचंद्र शुक्ल**

लेखक परिचय :

हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्लजी का जन्म 1884 में उत्तर प्रदेश के अंगोला नामक गाँव में हुआ । वे हिन्दी साहित्य के सर्वोत्कृष्ट गद्यकार हैं । वे हिन्दी के सबसे सम्मानित और विश्वसनीय आलोचक हैं ।आचार्य शुक्ल हिन्दी साहित्य में अपने निबंधों के लिए भी याद किए जाते हैं । उन्होंने दो प्रकार के निबंध लिखे । साहित्य समालोचना सबंधी निबंधऔर भाव या मनोविकार संबंधी निबंध । उनके ये निबंध चिंतामणि भाग–1 और भाग –2 में संकलित हैं । उनके मनोविकार संबम्धी निबंधों में उनके मन और बुद्धि का अद्भुत सामंजस्य दिखाई देता है । उनका हिन्दी साहित्य का इतिहास अत्यंत प्रामाणिक ग्रंथ है । चिंतामनि भाग–1 पर उन्हें 'मंगलाप्रसाद पारितोषक प्राप्त हुआ । 1941 में उनका निधन हुआ ।

भय एक मनोविकार संबंधी निबंध है । इस विचार प्रधान निबंध में हिन्दी के श्रेष्ठ निबंधकार आचार्य रामचन्द्र शुक्लजी नेमनुष्य के इस मनोविकार के अनेक पक्षों पर विचार करते हुए भय की अनुभूति को लोक व्यवहार की दृष्टि से बडी सूक्ष्मता से स्पष्ट किया है ।

भय की व्याख्या करते हुए शुक्लजी ने बताया है कि– किसी आती हुई आपदा की भावना या दु:ख के कारण के साक्षात्कार से जो एक प्रकार का आवेगपूर्ण अथवा स्तंभकारक मनोविकार होगा उसी को भय कहते हैं । क्रोध और भय दोनों के कारण दु:ख अथवा संकट है । मगर अंतर इतना है कि क्रोध में दु:ख या संकट निश्चित है जबकि भय में ऐसा नहीं होता । दु:ख या हानि की संभावना मात्र से भय उत्पन्न होता है । यदि कोई ज्योतिषी किसी गँवार से कहें कि 'कल तुम्हारे हाथ –पाँव टूट जायेंगे' तो उसे क्रोध ना आयेगा , भय होगा । पर उसी से यदि कोई दूसरा आकर

कहें कि ' कल अमुक– अमुक तुम्हारे हाथ पैर तोड देंगे' तो तुरंत वह त्योरी बदलकर कहेगा कि " कौन है हाथ–पैर तोडनेवाला ? देख लूँगा ।"

भय का विषय दो रूपों में प्रकट होता है । असाध्य रूप में और साध्य रूप में । असाध्य विषय वह है जिसका किसी प्रयत्न द्वार निवारण असंभव हो या असंभव समझ पडे । साध्य विषय वह है जो प्रयत्न द्वारा दूर किया जा सकता हो । दो मनुष्य एक पहाडी नदी के किनारे बैठे बातचीत कर रहे थे , इतने में शेर की दहाड सुनाई पडी । यदि वे दोनों उठकर भागने, छिपने या पेड पर चढने आदि का प्रयत्न करें तो बच सकते हैं । परिस्थिति व मनुष्य प्रकृति पर ये दोनों प्रकार के भय निर्भर है । अगर मनुष्य को दु:ख की अनिवार्यता , अपनी अक्षमता का बोध हो और उसके हाथ पांव नहीं हिल सकते तो उसे असाध्य भय के वर्ग में रख सकते हैं । दु:ख के निवारण का साहस व आत्मविश्वास का बोध होकर निवारण करने का प्रयत्न करता है तो इसे साध्य भय के वर्ग में रख सकते हैं ।

भय जब कुछ व्यक्तियों के स्वभाव का अंग बन जाता है तब उसे कायरता या भीरुता कहते हैं । यह पुरुष का दोष समझा जाता है जबकि स्त्री की शोभा माना जाता है । स्त्रियों के निर्भय होने पर आश्चर्य होता है । भीरुता के अनेक कारण हो सकते हैं – कष्ट सहने का असामर्थ्य, कष्ट निवारण की अक्षमता, अर्थहानि का भय आदि । समाज में धर्मभीरुता अच्छी समझी जाती है । लेकिन लेखक के अनुसार हद से ज्यादा धर्म भीरुता मनुष्य को कमजोर, बुझदिल बनाता है ।

दु:ख या आपत्ती का पूर्ण निश्चय न रहने पर उसकी सम्भावना मात्र के अनुमान से जो आवेग शून्य भय होता है उसे आशंका कहते हैं उसमें वैसी आकुलता नहीं होती । उसका संचार कुछ धीमा पर अधिक काल तक रहता है । घने जंगल से होकर जाता हुआ यात्री चाहे रास्ते भर इस आशंका में रहे कि कहीं चीता न मिल जाये, पर वह बराबर चल सकता है

। यदि उसे असली भय हो जाएगा तो वह या तो लौट जाएगा अथवा एक पैर आगे नहीं रखेगा ।

सभ्य उन्नत समाज में भय अल्प प्रमाण में और अल्प अवधि के लिए होता है । मगर असभ्य लोगों में जंगली जातियों में भय बहुत मात्रा में और दीर्घ अवधि तक रहता है । अतिभय और भयकारक का सम्मान असभ्यता के लक्षण हैं । शिक्षा का अभाव ही इसके लिए कारण है ।

जंगली मनुष्यों का संबंध बहुत कम लोगों से होने के कारण भय देनेवाले व्यक्ति की पूजा करते हैं । दूसरी ओर शहर के लोगों का संबंध अनेक लोगों के साथ होने से भय का प्रभाव इतना अधिक तीव्र नहीं होता । अज्ञात और अपरिचित के प्रति भयभीत होना उसमें दु;ख की संभावना करना प्राणिमात्र का धर्म होता है । प्रत्येक प्राणि बाधा और दु:ख का अंदाजा करके ही पैर रखता है । उदाहरण के लिए प्रारंभ में बच्चे भी अपरिचित से मिलते डरते हैं घर के अंदर भागते हैं । मगर जैसे जैसे अपरिचित से अज्ञात विषयों से परिचय होता है वैसे वैसे उनका भय छूटता जाएगा । समस्त मनुष्य जाति कीसभ्यता के विकास का यही क्रम बनकर आया है ।

अपने शरीरबल, हृदयबल और ज्ञानबल के विकास के द्वारा हम भूत–प्रेत और पशुओं के भय से बहुत कुछ छुटकारा पा चुके हैं । अब मनुष्य के लिए मनुष्य का भय बना हुआ है । इस भय से छूटने के लक्षण भी नहीं दिखाई देते । अब मनुष्य के दु:ख के कारण मनुष्य ही है । सभ्यता से अंतर केवल इतना ही पडा है कि दु:खदान की विधियाँ बहुत जटिल हो गयी हैं । आज इस बात की आशंका तो नहीं रहती कि कोई जबरदस्ती आकर हमारे घर , खेत, बाग –बगीचे, पैसे छीन न ले, पर इस बात का खटका रहता है कि कोई नकली दस्तावेजों, झूठे गवाहों और कानूनी बहसों के बल से हमें इन वस्तुओं से वंचित न कर दें ।

सभ्यता की वर्तमान स्थिति में एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से वैसा भय तो नहीं रहा । पर एक जाति को दूसरी जाति से, एक देश को दूसरे देश से भय के स्थायी कारण प्रतिष्ठित हो गये हैं । सबल और सबल देशों के बीच अर्थ संघर्ष की, सबल और निर्बल देशों के बीच अर्थ शोषण की प्रक्रिया अनवरत चल रही है ।

प्रत्येक प्राणि को केवल सुख शांति की कामना करते सुखी होने का अधिकार है उसी प्रकार उसे समाज और अपने लिए भय से मुक्त होने के लिए शत्रुओं में भय संचार करना भी जरूरी है, इस दिशा में प्रयत्नशील होना ही धर्म है । अर्थात किसी को न डराने से ही काम नहीं चलता है, यह भी आवश्यक है कि कोई दूसरा हमें डराने का साहस कभी न करें– इसके लिए हमें प्रयत्नशील होना चाहिए । इस प्रकार इस संसार में किसी को न डराने से ही डरने की संभावना दूर नहीं हो सकती । साधु से साधु प्रकृतिवाले को क्रूर लोभियों और दुर्जनों से क्लेश पहुँचता है । अत: उनके प्रयत्नों को विफल करने का भय संचार द्वारा रोकने की आवश्यकता समाज में अनिवार्य है ।

विशेषताएँ:–प्रस्तुत मनोविकार संबंधी निबंध में श्री रामचंद्र शुक्लजी भय की परिभाषा देते हुए भय के विविध पक्षों पर प्रकाश डालते हैं । जब हमारी इंद्रियाँ दूर से आनेवाली क्लेशकारिणी बातों का पता देने लगती हैं, तब हमारा अंत:करण भावी आपदा का निश्चय कराने लगता है, तब हमारा काम दु:ख मात्र से नहीं चल सकता, बल्कि भागने या बचने की प्रेरणा करनेवाले भय से चल सकता है । शुक्लजी ने निबंध में भाव की केवल मनोवैज्ञानिक प्रामाणिकता ही सिद्ध नहीं की है, वरन लोकव्यवहार और साहित्यिक अभिव्यक्ति के मध्य संगति भी स्थापित की है । कर्मक्षेत्र के चक्रव्यूह में जैसे सुखी होना प्रयत्न साध्य है वैसे ही निर्भय रहना भी । निबंध की भाषा परिष्कृत, सुसंस्कृत तथा प्रौढ है । व्यक्तिगत गंभीरता भाषा

में मिलती है । विषय को बहुत अच्छी तरह समझाने की कोशिश शुक्लजी ने की है ।

एक अंक के प्रश्न

1. भय निबंध के लेखक कौन हैं ?

   आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

2. भय किसे कहते हैं ?

   किसी आती हुई आपदा की भावना या दु:ख के कारण के साक्षात्कार से जो एक प्रकार का आवेगपूर्ण अथवा स्तम्भ कारक मनोविकार होता है उसी को भय कहते हैं ।

3. भय का विषय किन दो रूपों मीं सामने आता है ?

   असाध्य रूप में और साध्य रूप में भय का विषय सामने आता है ।

4. आशंका की परिभाषा बताइए ।

   दु:ख या आपत्ति का पूर्ण निश्चय न रहने पर उसकी सम्भावना मात्र के अनुमान से जो आवेग शून्य भय होता है उसे आशंका कहते हैं

5. भय जब स्वभावगत हो जाता है तब क्या कहलाता है ?

   कायरता या भीरुता

निबंधात्मक प्रश्न :

1.भय निबंध का सारांश लिखकर विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

टिप्पणी के प्रश्न :

1. क्रोध और भय का अंतर 2.आशंका

-प्रो.सोफिया डायस

हिन्दी विभागाध्यक्षा, मिलाग्रिस कॉलेज, कल्याणपुर, उडुपि

****

12. वसना खुशीनगर में

- **केदारनाथ सिंह**

लेखक परिचय

हिन्दी के चर्चित साहित्यकार केदारनाथ सिंह का जन्म ७ जुलाई १९३४ को चकिया जिला बलिया (उ प्र) में हुआ। प्रस्तुत संस्मरण 'बसना खुशीनगर में' केदारनाथ जी का निजी अनुभव है। १९७४-७५ के आस-पास लेखक खुशीनगर में एक जमीन का एक टुकडा जब से देखा था तब से उनके मन में यह इच्छा हुई कि इस जमीन को खरीदकर छोटा सा घर बनाऊ। लेकिन यह इच्छा पूरी न हो सकी। क्योंकि दिल्ली और कुशीनगर को जोडनेवाला पुल कभी नहीं बना।

एक बार लेखक दिल्ली आ गये तो न चाहते हुए भी वह दिल्ली के ही हो गए। फिर भी उन्होंने कुशीनगर और जमीन के टुकडे को कभी नहीं भूल पाये। वे रिटायर होकर खुशीनगर में बसना चाहते थे, लेकिन धीरे-धीरे यह विचार स्मृति से ओझल हो गया। पिछले दिनों लेखक खुशीनगर से गुजर रहे थे तो देखते हैं वह जमीन का वैसे ही खाली पडा है। दिल्ली की धूल की अनगिनत परतों के नीचे दबी इच्छा(बसने की) फिर से जाग उठी।

लेखक दिल्ली में बिना जमीन से घर लिया था यानी अपार्टमेंट में अलग-अलग प्रदेश के विभिन्न धर्म, जाति, संस्कृति के लोग बसना ही कास्मोपालिटिन संस्कृति का खास चरित्र-लक्षण था। लेखक पहली बार खुशीनगर गये थे तो वह खासा उजाड या और आवागमन के सुविधा के अभाव के कारण विदेशी पर्यटकों की संख्या, बुद्ध की उस निर्वाण स्थली को देखने जानेवाले बहुत कम थे । लेकिन जब जापान सरकार की मदद से बेहतरीन और हवाईहड्डे का निर्माण हुआ है। एक सरकारी गेस्ट हाऊस के अलावा अनेक नये विदेशी होटल बन चुके हैं लेकिन यह आधुनिक सुविधा बहुत महंगे लगने के कारण लेखक के मन में प्रश्न उठता है कि आधुनिकता इतनी महँगी क्यों होती है ? भारतीय जीवन की जो सामान्य विचार है यह

आज तक आधुनिकता क हिस्सा नहीं बन पाई है ? और आधुनिकता के बारे में बात करना लेखक को विडंबना सी लगती है।

जिस खुशीनगर में लेखक बसना चाहते थे वह पुराना कुशीनगर का परिवेश खुदाई के बाद संपूर्ण बदला हुआ था। वहाँ के शाल वृक्ष पूर्ण खाली हो चुके थे और जो बचे-कुचे वृक्ष, वनस्पतियों के बीच थोडा सा बनैलापन भी था। इसी परिवेश के एक हिस्सा ये चीनी बाबा। चीनी मूल के वे पिछली शताब्दी के शुरु में भटकते हुए किसी स्थान के आकर्षण से खिंचा हुआ कोई चला आता है उसी प्रकार किशोर वय में कुशीनगर में चुप-चाप आये थे। वहाँ उनका घर, झोंपडी, आश्रय न होने के कारण विशाल बरगद पेड ही उसके लिए सब कुछ था। हाँ वृक्ष की यह खूबी थी कि यह स्तूप (किसी महान पुरुष की अस्थि, दाँत, केश आदि स्मृति चिह्नों को सुरक्षित रखने के लिए उन पर बनाया हुआ मिट्टी, पत्थर का ऊँचा टीला-पहाडी) के ऊपर खडा था। इस वृक्ष के दाबाव के कारण यह स्तूप थोडा झुका हुआ है और स्तूप के लिए हानिकारक भी लग रहा था।

१९६० में तत्कालीन संस्कृति प्रेमी प्रधानमंत्री पंडित जवहरलाल नेहरू कुशीनगर आये और इस स्तूप को देखते ही इस बरगद पेड को निकालने का आदेश दिया। इस आदेश के सामने भिक्खू बाबा का विरोध कुछ काम न आया और इस बरगद पेड को गिरा दिया गया। वृद्ध चीनी भिक्खू के आँखों के सामने ६० साल के वृक्ष का जीवन देखते-देखते चूर-चूर हो गया। जब इसी घटना के बाद लेखक उस बाबा को देखा तो वह बाबा उस स्तूप के निकट एक छोटी सी कमरे में बंद हो गये थे। और न खाना न पानी। जब भी कोई भी उन्हें खाना देने के लिए पुकारते थे तो लगता था कि उसकी आवाज जैसे हजारों मील चीनी देश की किसी छोटी सी पुराने कमरे में से होकर निकलती हो। अंत में उस चीनी बाबा का निर्वाण (मोक्ष) उसी भूखंड पर हुआ जहाँ महात्मा बुद्ध का हुआ था। अब यह घटना अफवा बन चुकी है, पर जब भी लेखक इस घटना को याद करते हैं तो कुशीनगर में बसने का विचार और न बसने की कसक दोनों झूठ लगने लगते हैं।

निबंधात्मक प्रश्न :

1.बसना कुशीनगर में केदारनाथ जी के निजी अनुभव को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए

2. महात्मा बुद्ध के स्थान पर एक चीनी भिक्षुक का कैसे और क्यों निर्वाण हुआ बताइए।

टिप्पणी के प्रश्न :

१.बरगद का पेड २. चीनी बाबा ३. कुशीनगर

प्रस्तुति : डॉ.शाहिदा जहान

डॉ जी शंकर राजकीय महाविद्यालय, उडुपि

****

13. स्त्री-शक्ति की भूमिका से उठते कई सवाल

- **सुधा अरोड़ा**

लेखक परिचय:

सुधा अरोड़ा का जन्म लाहौर में 4 अक्टूबर 1946 को हुआ था। उनकी उच्च शिक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय से हुई। उनकी कहानी संग्रह कुछ इस तरह से है ,'बगैर तराशे हुए , 'युद्ध विराम ' 'काला शुक्रवार ,'काँसे का गिलास,''एक और औरत, आदी इसके अलावा उन्होंने उपन्यास , एकांकी में अपनी कलम चलाई है। कई पुरस्कारों से भी पुरस्कृत है।

समान्तर कहानीकारो में सुधा अरोड़ा की अपनी ही पहचान है। नये दौर में स्त्री मुक्ति के सवाल और भूमंडलीकरण के कारण मनुष्य जीवन में आ रहें बदलाव को लक्षित करना उनकी प्राथमिकता रही है। यह निबंध सुधा अरोड़ा की सशक्त निबंध हैं, इसमें उन्होंने स्त्री विमर्श करते हुए स्त्री प्रश्नों को राजसत्ता और प्रभुसत्ता से जोडती हैं। पूरे निबंध में स्त्री अस्मिता पर सवाल किया है। निबंधकार ने पौराणिक राम कथा का सीता तथा आधुनिक युग में जी रहे नारी शक्ति का सच्चा चित्रण दिया है । सदियों से स्त्री को शक्ति के रूप में पूजा किया जाता है । कभी उसे देवी की तरह ऊँचे आसन पर स्थान दिया जाता था। पुरुष का किसी भी जीत में उसे शमिल नहीं किया जाता

था, तथा स्त्री शक्ति को नगण्य कर दिया जाता था। समय चाहे कितना भी बदल जाये, अंतिम विजय सिर्फ सदशकित की मदद से मिल सकती है। यह सिर्फ़ राम कथा का ही सच नहीं,आधुनिक युग का भी सच है। जीवन के हर तरह के संघर्ष में जीत तब ही निश्चित हो पाती है, जब स्त्री किसी-न- किसी रूप में साथ हो चाहे माँ के रूप हो , बहन,पत्नी, बेटी या मित्र के रूप में। हरेक स्थिति में पुरुष की शक्ति का स्रोत ही स्त्री हैं। जीवन की रोज की जिदंगी से जुड़ी घटनाओं में पुरुष की शक्ति के तौर पर हर मुकाम पर कोई न कोई स्त्री खड़ी मिलती है। हरेक मौके पर स्त्री का वजूद पुरुष की मदद, संबल, प्रेरणा और सहयोग के लिए हुआ ही करता है। पुरुष को अर्थ उपार्जन के कारण सदियों से घर का कर्णधार मानते रहे , उसके अनुपस्थिति में सारे घर की देख- भाल करती एक गृहिणी का योगदान रहा है। इसका श्रेय उसे कभी नहीं दिया गया,सेवाएं जरूर ली गयी पर संपत्ति का हकदार उसे कभी नहीं माना गया। समय बीतते गए, स्त्री शक्ति को अनदेखा किया गया घर में अष्टभुजा बनकर सारी दायित्व निभाने वाली स्त्री अपने जिम्मेदारियों से पीछे हटती है तो उसके घर परिवारवाले ही चरित्रहीन तथा कुल नाशी का संज्ञा दे बैठते। स्त्री इन सबको चुपचाप सहती और इसी में अपनी सार्थकता मान लेती, और उसका उल्लंघन कभी नहीं करती। स्त्री ने आखिरकार अपनी शक्ति को अपने पति और परिवार की उन्नति और विकास के लिए बनाए रखा। हर कहीं सहयोगी भूमिका में मौन ,शांत और अंततः अंतत में विलीन होकर सब कुछ सहती सहयोग करती और चुप रहती। पुरुष सत्ता ने स्त्री को देवी की तरह प्रतिष्ठित करके उससे मानवी होने के सारे अधिकार और श्रेय छीन लिए। इससे उसकी शक्ति ,पूजा अर्चना तक ही सीमित रहा। इन मुश्किलों के बावजूद स्त्री ने अपनी शक्ति को हथियार बनाया और नैसर्गिक गुणों को अपने ताकत में रूपांतरित किया। शिक्षा और जागरूकता ने स्त्री

को सवाल करना सिखाया और उन्हीं सवालों ने एक तरफ स्त्री को अपनी शक्ति का एहसास कराया तो दूसरी तरफ पुरुष सत्ता को चुनौती की आहट सुनाई पडी । जैसे ही उसने सवाल उठाए ,अधिकार मांगे ,सत्ता की लड़ाई शुरू हो गई। इससे सामाजिक सन्तुलन गड़बड़ाया और स्त्री का दोहरा संघर्ष शुरू हो गया । राम कथा को हम देखेंगे तो इसमें राम और रावण का चरित्र नजर आयेगा जिसमें राम ने स्त्री के साथ सम्मान से पेश आया इसलिए वह विजयी माना गया। वहीं पर रावण ने सीता का अपहरण करके जबरन उसे अपने पास रखने का अपराधी बना। इसी वजह से रावण का सारा वैभव और ज्ञान क्षीण होता दिखता है। कहीं न कहीं यह लोक स्वीकृति हैं , इसलिए सारी सहानूभूति मर्यादा पुरुषोत्तम राम के पास हैं। रामकथा में नारी जीवन बहुत ही संघर्ष तथा जटिल रहा है। कौशल्या ,सुमित्रा, उर्मिला,मंदोदरी,तारा आदि ना जाने कितने स्त्रियां है जिन्होने पति के प्रति समर्पण भाव दिखाया। सीता चरित्र इन सबसे अलग तथा विराट है । सौ दुख सहने के

बावजूद उसने अग्निपरीक्षा दी और उसे गर्भकाल में बेवजह जंगल में छोड दी गई। इन मुश्किलों को झेलते उन्होंने राम की वंशबेल को बढाया और अपनी जुडवाँ संतान – लव और कुश को योग्य बनाया। सीता एक मात्र ऐसा चरित्र है , जिसने सब कुछ सहन करके पितृसत्ता की जड़ो को सबसे अधिक मजबूत किया। सीता सबके लिए आदर्श का प्रतिरूप क्योंकि पुरुष के सभी गलत निर्णय को बिना सवाल किये मान लेती है। वह अपने उस अपराध के लिए सुना दी गयी सजा को भी स्वीकार कर लेती है जो उसने किया ही नहीं। इसी कारण से उसे अनेक त्रासदी झेलते हुए जंगल मे भटकना पडा। समर्पण की पराकाष्ठा को छुते हुए आखिर में उन्होंने धरती में समा जाने का निर्णय लिया। सीता रावण की जबरदस्ती का शिकार ही नहीं हुई बल्कि मर्यादा और प्रजा प्रेम के नाम पर राम की ज्यादती का भी शिकार हुई । रावण आज अनेक रूपों में संक्रमित हो चुका है- प्रेमी , पति,

पिता या भाई- वह हर कहीँ हो सकता है। समाज,सत्ता,धरम,और खाप के न जाने कितने रावण है जो राम कि मुखौटा पहने , महलों से ले कर झोपड़ी तक कितने रावण अपना आसन जमाये नजर आते हैं। आज स्त्री की भूमिका और स्वरूप भी बदली है , वह बेवजह अग्निपरीक्षा देने तैयार नहीं है , वह संघर्ष कर रही हैं। संघर्ष न सिर्फ रावण से कर रही है , राम के अन्याय को भी धिक्कार रही है। यह संघर्ष दोहरा- तिहरा , चहुँमुखा है और लम्बा भी है। स्त्री का संघर्ष प्रगतिशील समाज के विकास और उन्नति के लिए बहुत जरूरी है। यह तभी मुमकिन होगी जब वह सकारात्मक ऊर्जा ,प्रकृतिगत लचीलेपन और दूरदर्शित से स्थितियों को बदल पाने में सक्षम होगी।

विशेषताएँ:

लेखिका पुरुष प्रधान समाज में हुए बदलाव को तथा स्त्री शक्ति भूमिका से उठते सवालों को सुलझाने का भरपूर कोशिश करती है। पौराणिक सीता का चरित्र चित्रित करके शिक्षित नारी और जागरूक नारी का परिचय भी दिया है। आज शिक्षित नारी आत्म निर्भरता से हरेक क्षेत्र में आगे बढ रही है। वह आज सीता बनने तैयार नहीं है। वह अपने हक तथा अधिकारों के प्रति सचेत और जागरूक है।

टिप्पणी के प्रश्न:

1.स्त्री शक्ति 2.शिक्षित और जागरूक नारी 3.राम कथा में सीता

निबंधात्मक प्रश्न:

1. स्त्रीशक्ति की भूमिका से उठते कई सवाल निबंध का सारांश लिखि
2. लेखिका सीता के चरित्र को अधिक महत्व क्यों देती हैं?
3. शिक्षा और जागरूकता से स्त्री के जीवन में क्या परिवर्तन हुए ? निबंध के आधार पर समझाइए ।

प्रस्तुति: डॉ सुजना
हिन्दी अध्यापिका ,सेंट रेमांड्स कॉलेज वामांजूर

Second Semester B.Com Degree Examination

(CBCS)

Sub: Compulsory Foundation Language Hindi

Group III, Paper-II

Time: 3 hrs **Max.Marks: 80**

I निम्न प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए। **5x1=5**

1. कबीर का साहित्य किन रूपों में मिलता है?
2. रहीम का पूरा नाम लिखिए।
3. सूरदास ने विनय पद में किसके प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित करते हैं?
4. दिनकर का पूरा नाम लिखिए।
5. 'धब्बा' किसका प्रतीक है?

II प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए। **2x5=10**

अ) गुरू कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट॥

अथवा

निसि दिन नैन हमारे।
सदा रहति पावस रितु हम पर, जब मैं स्याम सिधारे।
दृग अंजन न रहत निसि बासर, कर कपोल भए कारे।
कंचुकि–पट सूखत नहिं कबहूँ, उरविच बहत पनारे।

आ) तुम श्रेयस् की उत्तेजना–प्रेरणा–श्री हो
मन में घुलती हुई पंक्ति के प्रतीक भी हो
बार–बार आते हो
नए–नए तुम कहलाते हो।

अथवा

तब खून की एक–एक बूँद जो कहती है
उसे लिखा जाना चाहिए
कविता से
कहानी से हटकर भी लिखा जाना चाहिए ।

III अ) सूरदास के पदों में चित्रित कृष्ण की बाल–लीलाओं का वर्णन कीजिए ।

अथवा 10

रहीम के दोहों में अभिव्यक्त जीवन–मूल्यों का विश्लेषण कीजिए ।

आ) 'प्रतिबिंब' कविता में कवि पन्त ने प्रकृति के जिस स्वरूप का वर्णन किया है, उसे स्पष्ट कीजिए ।

अथवा 10

'यह महज कोरा कागज़ नहीं' के माध्यम से कवि किसे क्या संदेश देते हैं? वर्णन कीजिए ।

IV शुक्ल के अनुसार मानव जीवन में 'भय' का क्या स्वरूप है?

अथवा **10**

सुधा अरोड़ाजी ने अपने निबंध के माध्यम से स्त्री–शक्ति को लेकर जो सवाल उठाए हैं? उसे उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ।

V किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी लिखिए: 2x5=10

१.भारतेन्दुजी का देशप्रेम 2) भय के भिन्न रूप

3) चीनी भिक्षुक का स्वरूप 4) स्त्री संघर्ष

VI काल क्या है? इसके प्रमुख भेदों को सोदाहरण समझाइए ।

अथवा **5**

वाच्य की परिभाषा देकर उसके भेदों का वर्णन कीजिए ।

VII अ) वाच्य परिवर्तन कीजिए: 5x1=5

1. वह नहीं हँसता ।

2. ममता खाना पका रही है ।

3. पिताजी से अखबार पढ़ा जा रहा है ।

4. मैंने पत्र लिखा ।

5. राजू तेज़ नहीं दौड़ता ।

आ) निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए । **5x1=5**

1. साहसी विद्यार्थी उन्नति करते हैं । (मिश्र वाक्य)

2. जब असफल हो गए, तो शोक करना व्यर्थ है । (सरल वाक्य)

3. भोर होते–होते हम दिल्ली पहुँचे । (संयुक्त वाक्य)

4. सुषमा आयी और चली गयी । (सरल वाक्य)

5. विद्यार्थी परिश्रमी, तो अवश्य सफल होगा । (मिश्र वाक्य)

इ) पद परिचय दीजिए: **2x5=10**

1. रमेश यहाँ तीसरे बंगले में रहता है ।

2. जल्दी चलो, गाड़ी जानेवाली है ।

****

विहास वाणी

प्रकाशन

मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ

-विहास, मंगलूरु, कर्नाटक